FEB.
1950

PRICE
0-6-0

CHANDAMAMA : STORY MAGAZINE FOR THE YOUNG

झण्डा ऊंचा रहे हमारा !

चन्दामामा

विषय सूची

इसके अलावा मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर रँगीले चित्र, और भी अनेक प्रकार की विशेषताएँ हैं।

चन्दामामा कार्यालय

पोस्ट बाक्स नं० १६८६

मद्रास—१

लेखकों के लिए

एक सूचना

★

चन्दामामा में बच्चों की कहानियाँ, लेख, कविताएँ वगैरह प्रकाशित होती हैं। सभी रचनाएँ बच्चों के लायक सरल भाषा में होनी चाहिए। सुन्दर और मौलिक कहानियों को प्रधानता दी जाएगी। अगर कोई अपनी अमुद्रित रचनाएँ वापस मँगाना चाहें तो उन्हें अपने लेख के साथ पूरा पता लिखा हुआ लिफ़ाफ़ा स्टांप लगा कर भेजना होगा। नहीं तो किसी हालत में लेख लौटाए नहीं जा सकते। पत्र-व्यवहार करने से कोई लाभ न होगा। अनावश्यक पत्र-व्यवहार करने से समय की क्षति होती है और हमारे आवश्यक कार्य-कलाप में बाधा पहुँचती है। कुछ लोग रचनाएँ भेज कर तुरंत पत्रों पर पत्र लिखने लगते हैं। उतावली करने से कोई फ़ायदा नहीं। आशा है, हमारे लेखक इन बातों को ध्यान में रख कर हमारी सहायता करेंगे।

★

—: कार्यालय :—

३७, आचारप्पन स्ट्रीट, मद्रास—१.

मां-बच्चों का मासिक पत्र

संचालक: चक्रपाणी

वर्ष १ | फरवरी १९५० | अङ्क ६

सदियों की गुलामी के बाद १९४७ की १५ अगस्त को भारत आजाद हुआ। अंग्रेज़ बोरिया-बँधना बांध कर हिन्दुस्तान छोड़ कर रवाना हुए। दिल्ली में हिन्दुस्तानियों की अपनी सरकार राज करने लगी। नूतन संविधान बनाने के लिए भारतीय संविधान परिषद् की स्थापना हुई। इस परिषद् ने कठिन श्रम करके जो संविधान बनाया वह गत मास की २६ को अमल में आया। इसके माने है कि २६ जनवरी १९५० से भारतवर्ष एक सर्व-स्वतन्त्र प्रजातन्त्र हो गया। चन्दामामा के मुख-पृष्ठ पर जो चित्र छपा है वह भारत के राष्ट्रपति का झण्डा है।

यद्यपि भारत नाम के लिए स्वतन्त्र हो गया है तो भी सच्ची स्वतन्त्रता अभी हमें प्राप्त करनी है। वह स्वतन्त्रता भारत के हरेक वर्ग, धर्म और व्यक्ति के कठोर श्रम और स्वार्थ-त्याग से ही मिल सकती है। आशा है, ऐसी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के हम योग्य बनेंगे और भारत नूतन-संविधान के अन्तर्गत हर प्रकार से उन्नति करेगा। भारत के नवोदित प्रजातन्त्र के उपलक्ष्य में हम चन्दामामा के पाठकों का अभिनन्दन करते हैं।

पूज्य बापूजी

माता कस्तूरी·बा

पट्टाभि सीतारामय्या
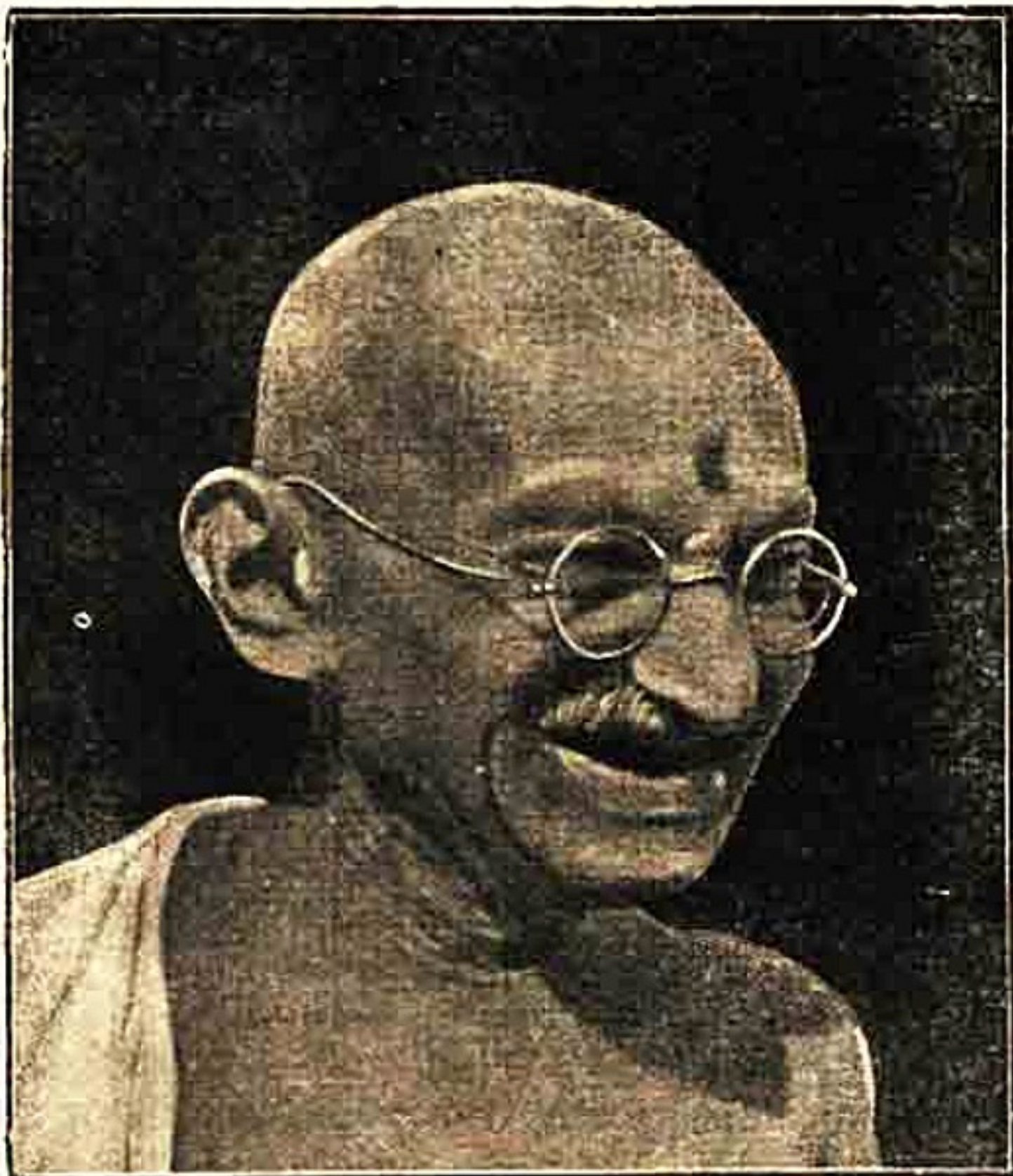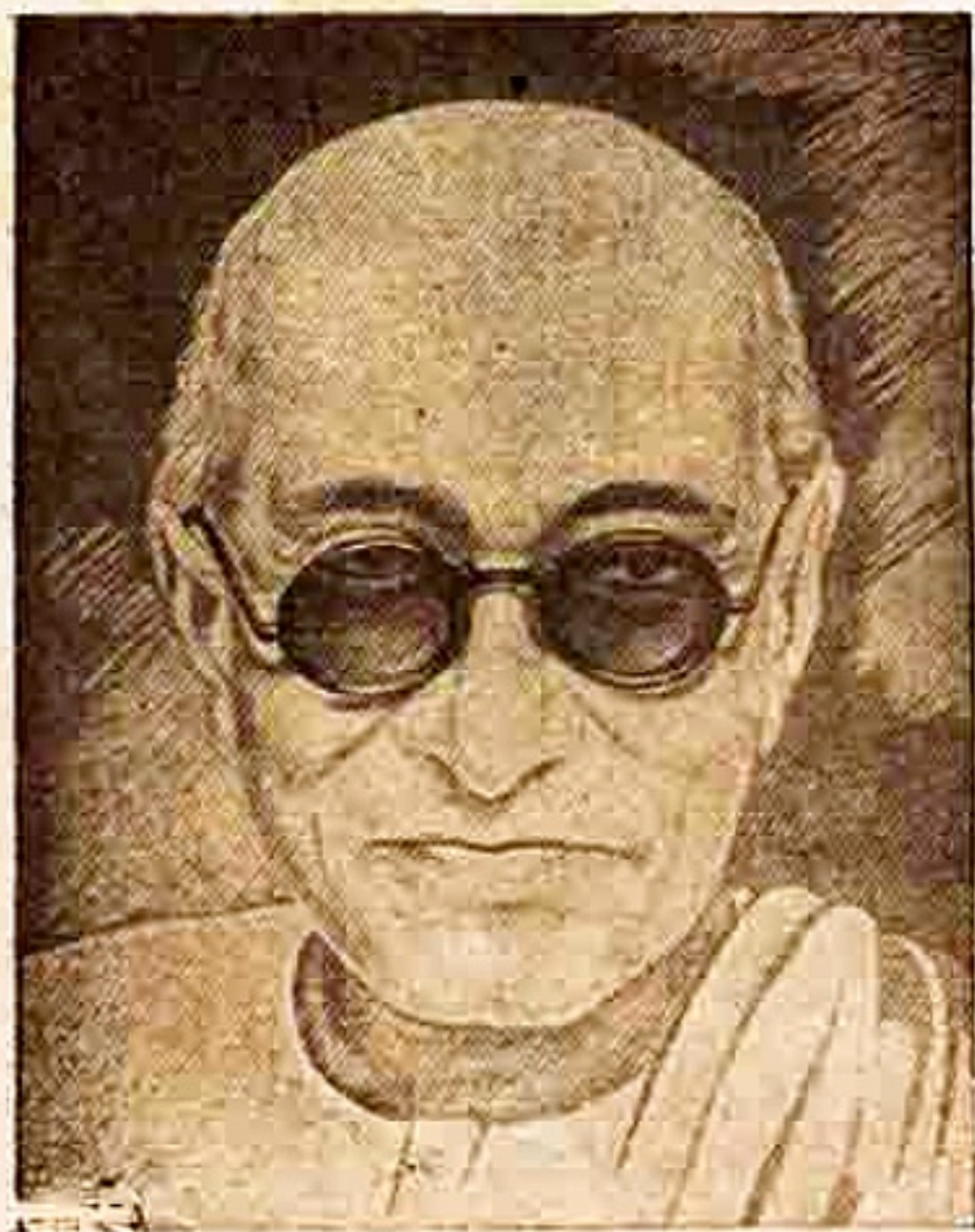
च० राजगोपालाचारी
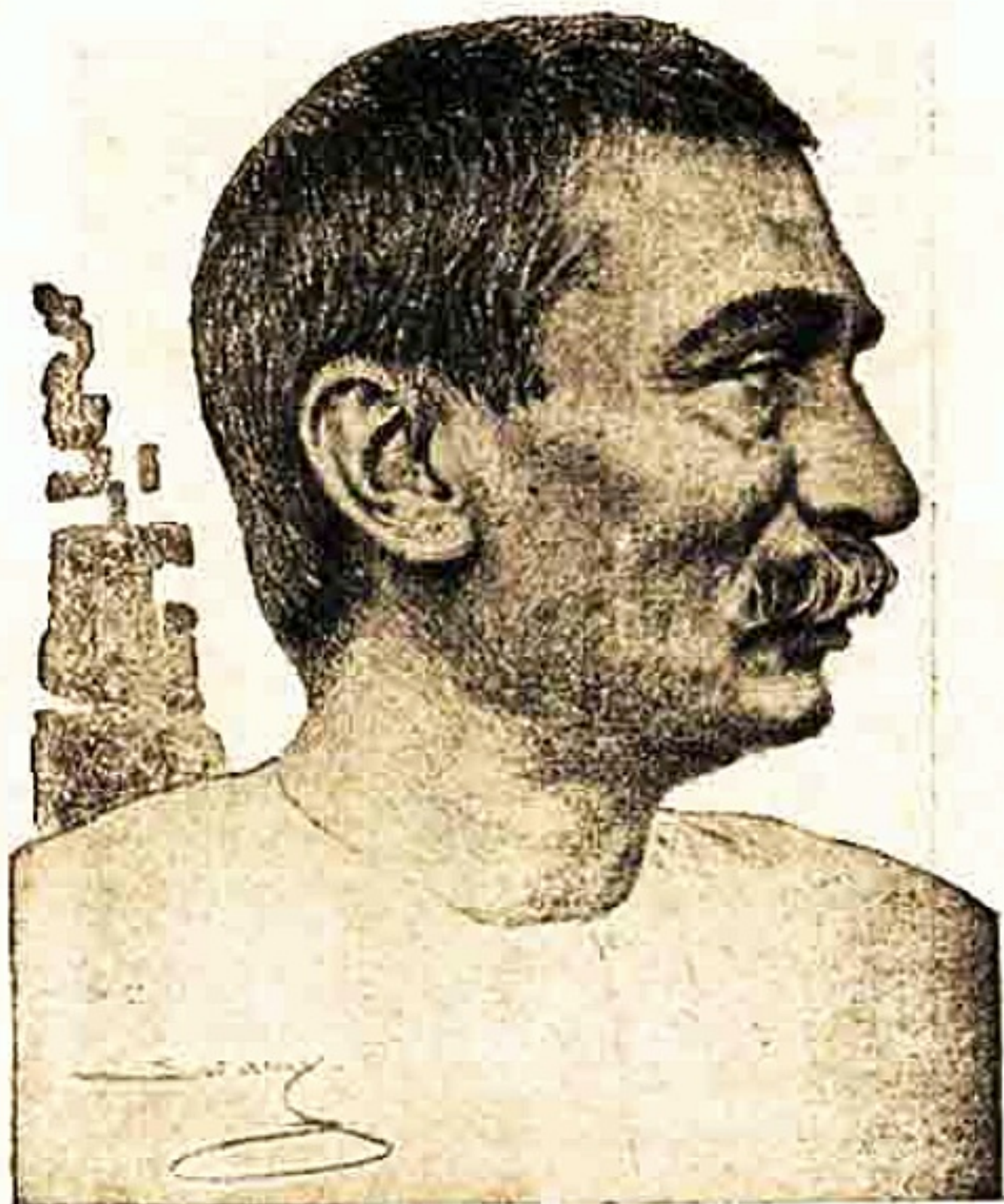
राजेन्द्र बाबू

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

सर्दार वल्लभभाई पटेल
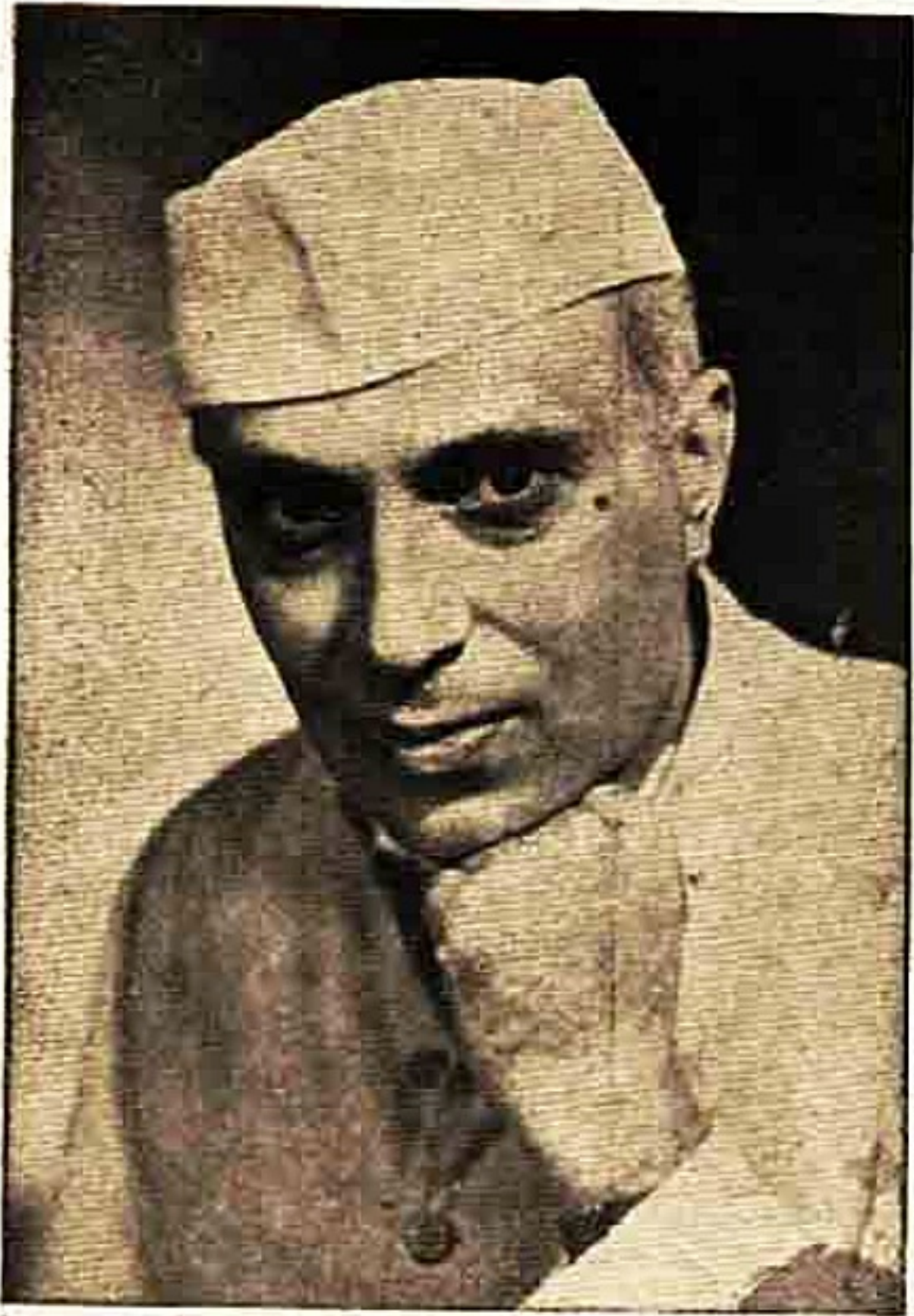
इस बार वर्धमान का पिंजड़ा और भी सजाया गया। चपला ने और भी चार पाँच गद्दे बिछा कर वर्धमान के लिए खूब मुलायम बिछौना बिछा दिया। इससे उसको राह में ज़्यादा तकलीफ न हुई। किसान घोड़े पर सवार था। उसके पीछे चपला भी वर्धमान की पेटी को हाथ में थामे बैठ गई। चपला के अनुरोध करने पर वे लोग राह में जगह-जगह रुकते धीरे-धीरे चलने लगे। क्योंकि उसे डर था कि राह की थकान से कहीं वर्धमान की तन्दुरुस्ती न बिगड़ जाए।

लेकिन उसके पिता को वर्धमान की कुछ भी परवाह न थी। वह जितनी जल्दी हो दोनों हाथों रुपए लूटना चाहता था। इसलिए वह राह के हर एक गाँव में वर्धमान का तमाशा दिखाता हुआ चला। लोगों के कानों में अब तक इस विचित्र जीव की शोहरत फैल चुकी थी जो कि ठीक उन्हीं की तरह खाता-पीता, हँसता-बोलता और सब काम करता है। इसलिए तमाशा देखने वालों की कमी न थी। किसान के आगे रुपयों की वर्षा हो रही थी। दिन-दिन वर्धमान का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था। वह दिन-दिन घुल-घुल कर दुबला-पतला हो रहा था। लेकिन किसान को इसकी क्या परवाह ! उसे डर था तो इस बात का कि कहीं यह राजधानी पहुँचने के पहले ही न मर जाए। अगर ऐसा हुआ तो वह राजा और रानी से ईनाम नहीं पा सकेगा !

"क्यों भई ! तुम मुझे धोखा देकर मर तो न जाओगे ? यदि ऐसा हुआ तो सारी बात ही चौपट हो जाएगी। अरे; ज़रा राजधानी पहुँचने तक तो बचे रहो।" किसान ने वर्धमान से कहा।

गलिवर्स ट्रावेल्स का स्वेच्छानुवाद

आखिर ये राजधानी पहुँचे। वहाँ कई जगह वर्धमान का तमाशा दिखाया गया। सारे शहर में धूम मच गई। इसी समय राजदूतों ने किसान के पास आकर कहा कि "रानी साहबा इसे देखना चाहती हैं। इसलिए चल कर रनवास में तमाशा दिखाओ।" बस, यह सुनते ही किसान ने सोचा कि मेरी तकदीर खुली। वह अब तक इसी मौके की ताक में बैठा था। वह मन ही मन सोचने लगा कि रानी वर्धमान का तमाशा देखने के बाद उसे क्या-क्या ईनाम देंगी?

अब वर्धमान के मन में उस किसान के प्रति कुछ भी श्रद्धा नहीं रह गई थी। वह अपनी इस जिन्दगी से बेज़ार हो उठा था। वह सोचने लगा कि कैसे यहाँ से भाग निकले। उसी कोशिश में अगर जान भी चली जाए तो कोई परवाह नहीं।

वह किसान तुरन्त वर्धमान की पेटी हाथ में लेकर रनवास जा पहुँचा। दोनों ने झुक कर रानी साहबा को सलाम किया और पेटी खोल कर वर्धमान को दिखाया। उसे देख कर रानी साहबा बहुत खुश हुईं। उन्होंने पूछा— "तुम्हें देख कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। क्या तुम हमारी बोली समझते हो? क्या तुम मुझसे बातचीत कर सकते हो?"

"मैं आपकी बोली समझता हूँ। मैं आप से बातचीत भी कर सकता हूँ। बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे आपके दर्शन हुए।" वर्धमान ने कहा।

अब तो रानी की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने किसान से पूछा—"क्या तुम इसे मुझे दे दोगे? मैं तुम्हें इसके लिए एक लाख अशर्फियाँ दूँगी।" यह सुन कर किसान मन ही मन फूल उठा। उसको इससे ज़्यादा और क्या चाहिए था? तिस पर वर्धमान की तन्दुरुस्ती भी दिनों-दिन बिगड़ती जा रही थी। कहीं वह मर गया तो? यह सब वह पहले ही सोच चुका था। इसलिए वह तुरन्त राज़ी हो गया।

"कहो मेरे प्यारे मुन्ने! तुम अपने मालिक को छोड़ कर मेरे पास रहना पसन्द करोगे?" रानी ने बड़े दुलार के साथ वर्धमान से पूछा।

"मुझे आपके यहाँ रहने में बड़ी खुशी होगी। लेकिन मेरी एक विनती है। आप इस चपला को भी यहीं रहने दीजिए। क्योंकि इसे छोड़ कर मैं नहीं रह सकता।" वर्धमान ने जवाब दिया।

"अच्छा तो चपला भी यहीं रहेगी। मैं इसका सारा इंतज़ाम कर दूँगी।" तुरंत रानी

ने कहा। किसान यह बात सुनते ही और भी खुश हो गया। उसके लिए यह बड़े गर्व की बात थी कि उसकी बेटी राजमहल में रहे। यह रानी साहबा और चपला से विदा लेकर घर चला तो खुशी के मारे उसके पैर धरती पर नहीं पड़ते थे।

वर्धमान को सावधानी से अपनी हथेली पर उठा कर रानी सीधे राजा साहब के पास गई। वर्धमान को उनके सामने रख कर उन्होंने पूछा—"क्यों, इससे बढ़ कर अजीब चीज़ आपने कहीं देखी है?"

अचरज के मारे राजा के मुँह से बात न निकली। उन्होंने वर्धमान से पूछा—"तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? तुम अपनी सारी कहानी हमें कह सुनाओ!"

वर्धमान ने जब अपनी रामकहानी कह सुनाई तो राजा के अचरज का ठिकाना न रहा।

अब वर्धमान बड़े आराम के साथ राज महल में रहने लगा। चपला हमेशा उसी के साथ रहती। उसके लिए रानी साहबा ने एक सुन्दर सन्दूक बनवा दिया। उसमें खिड़कियाँ और दरवाजे भी थे। अन्दर मेज कुर्सियाँ भी रख दी गईं। उसके लिए एक सुन्दर पलङ्ग भी उसमें डाल दिया गया। रानी ने उसके लिए दो नन्हीं सी चाँदी की थालियाँ और कटोरियाँ बनवाईं। जब राजा रानी भोजन करने बैठते तो वर्धमान भी अपनी नन्हीं थाली लेकर उनके साथ बैठ जाता। उसको उतने ढंग से खाते देखकर रानी साहबा को बड़ी खुशी होती थी।
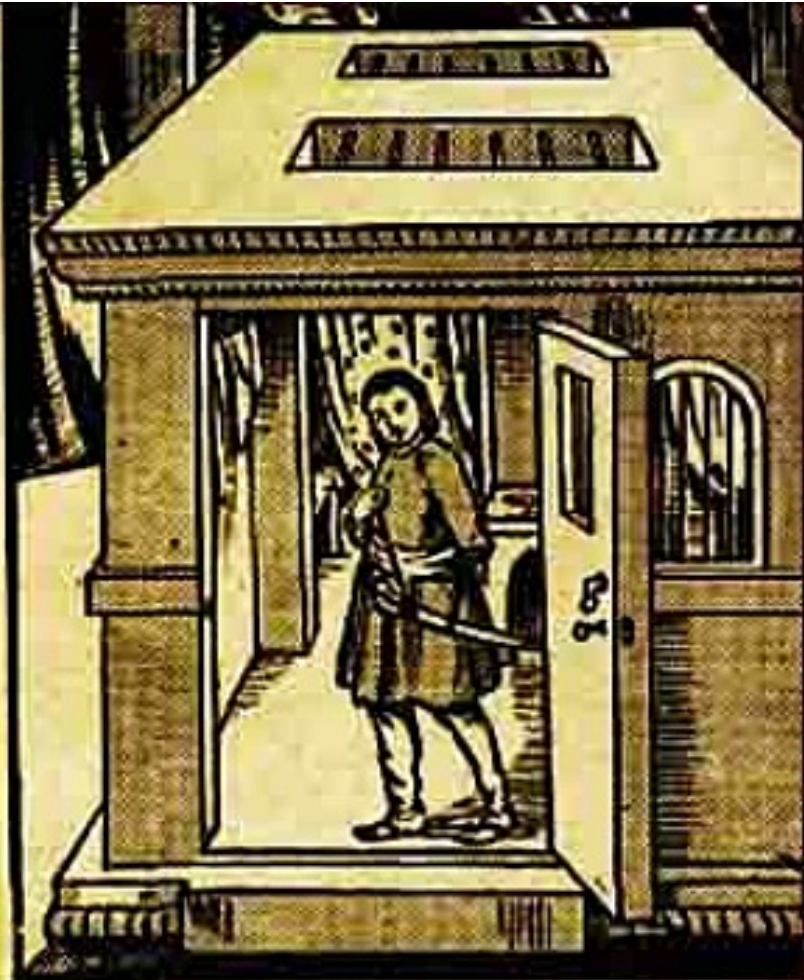
एक दिन भोजन के समय वर्धमान के सिर पर बड़ी आफ़त आ गई। लेकिन ईश्वर की कृपा से वह बाल-बाल बच गया। बात यह हुई—रानी साहबा के पास एक कुबड़ा और बौना नौकर रहता था। वह भी वर्धमान से पाँच गुना बड़ा था। एक दिन उसने

अकेले में वर्धमान को पकड़ लिया और एक घी के कटोरे में डाल कर हँसता और तालियाँ बजाता भाग गया। कुछ क्षण बाद जब रानी साह्वा और चपला उधर से निकलीं तो घबरा कर मुँह बाए खड़ी रहीं। फिर चपला ने किसी तरह उसे बाहर निकाला। तब तक वर्धमान बहुत सा घी पीकर बेहोश हो गया था। बहुत देर के बाद वह फिर होश में आया। लेकिन उस बौने को इसके लिए ऐसा पाठ पढ़ाया गया कि वह फिर कभी न भूल सके।

इस बौने ने पहले भी एक बार ऐसा ही किया था। न जाने, क्यों उसे वर्धमान को
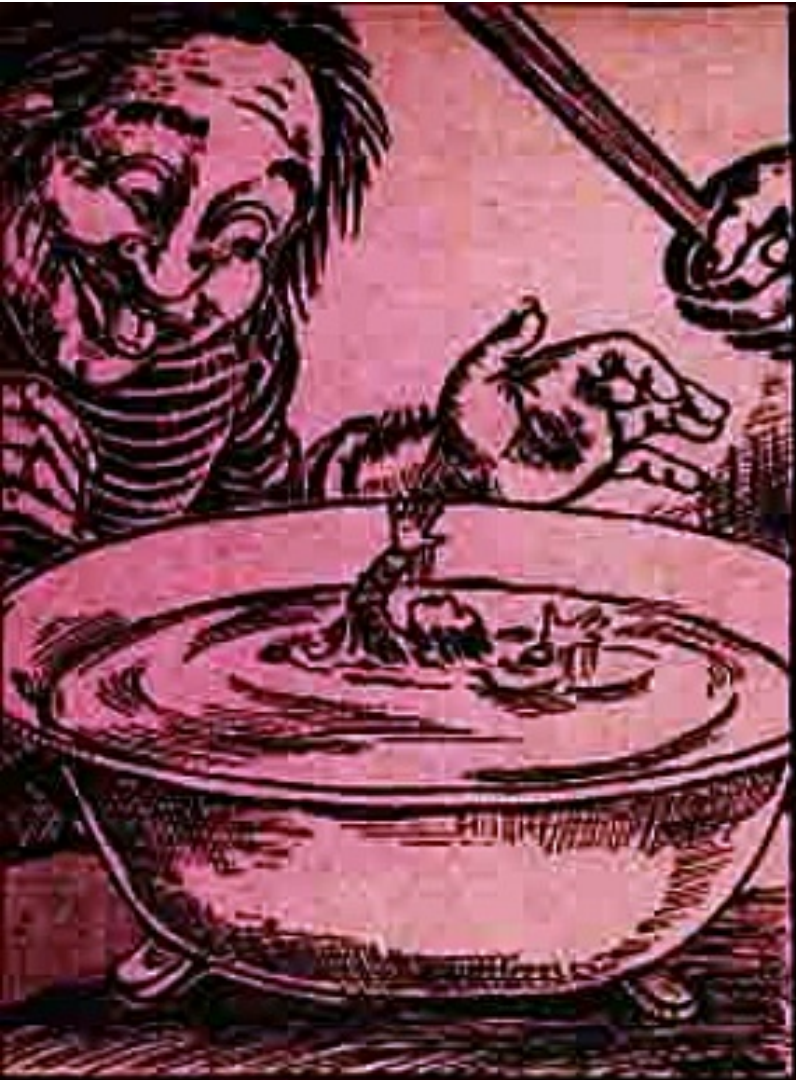
छलने में बड़ा मजा आता था! पिछली बार उसने एक हड्डी के खोंसले में वर्धमान को कमर तक घुसा दिया था। आखिर वर्धमान बड़ी मुश्किल से निकल सका था। उसने उस बार रानी साह्वा से शिकायत न की थी। इसीसे बौना बच गया था। लेकिन अब की तो उससे हमेशा के लिए पिंड छूट गया।

वर्धमान इस तरह दो साल तक राज महल में रहा। उसे वहाँ सब तरह का आराम था। लेकिन मन ही मन वह चिन्ता से घुला जा रहा था। उसका मन इस राक्षसों की दुनियाँ से भाग कर फिर से इन्सानों की दुनियाँ में जाने के लिए छटपटा रहा था।

इसी समय राजा और रानी को किसी काम से समुन्दर के किनारे के एक गाँव में जाना पड़ा। रानी के साथ चपला और वर्धमान भी चले। सफ़र में दोनों बहुत थक गए।

"मेरा जी बिल्कुल अच्छा नहीं है। अगर मुझे एक बार समुन्दर की हवा खिला लाओ तो अच्छा हो।" वर्धमान ने चपला से कहा। उसने मन में सोचा "चलो, कम से कम एक बार समुन्दर के दर्शन तो हो जाएँ।"

लेकिन चपला भी बहुत थकी-माँदी थी। इसलिए उसने वह पेटी एक छोकरे के हाथ में देकर कहा—"देखो, इसको हाथ से कभी छोड़ना मत। हिफ़ाजत से रखना।"

लेकिन वह लड़का बिलकुल अल्हड़ था। उसने वर्धमान की पेटी समुन्दर के किनारे एक चट्टान पर रख दी और खुद चिड़ियों के अण्डे खोजने कहीं चला गया।

उसी समय एक बाज उड़ता हुआ वहाँ आया। उसने उस पेटी को देखा तो झपटा और पञ्जों में पकड़ कर समुन्दर की ओर चला गया।

रानी साहबा और चपला ने समझा कि उनका प्यारा नन्हा 'मुन्ना' समुन्दर में डूब गया। उन्हें बड़ा दुख हुआ। लेकिन वास्तव में वर्धमान समुन्दर में डूबा नहीं। उस बाज ने थोड़ी दूर उड़ने के बाद पेटी को छोड़ दिया। पेटी समुन्दर की लहरों में उतराती बड़ी दूर चली गई। इतने में एक जहाज उधर से निकला। जहाज़ियों की नज़र उस पर पड़ी। उन्होंने वर्धमान को निकाल लिया। फिर उसका सारा हाल सुनने के बाद उसे अपने देश में उतार दिया।

अब वर्धमान ने देश-विदेश घूमना छोड़ दिया। उसने ब्याह कर लिया। चार-पांच बरसों में वह दो-तीन बच्चों का बाप भी हो गया। वह अब व्यापार करता है, और बड़े मजे से अपनी जिन्दगी बिता रहा है।

अब भी उस देश के सभी लोग क्या बच्चे, क्या जवान, क्या बूढ़े, बड़े चाव से उसकी यात्रा की विचित्र कहानियाँ कहते-सुनते हैं। अब भी उन कहानियों को सुन कर उनके अचरज का कोई ठिकाना नहीं रहता।

क्यों बच्चो! वर्धमान की विचित्र यात्रा की ये कहानियाँ सुन कर क्या तुम्हारे मन में अचरज नहीं हुआ! [समाप्त]

पुराने जमाने में स्वामी भोजनानन्द नामक एक कपटी साधु रहता था। वह गाँव-गाँव घूम कर लोगों को अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाता और लम्बे-लम्बे उपदेश देता था। यही उसका पेशा था। सब लोग उसे बड़ा भारी भक्त समझते थे। उसने लम्बी दाढ़ी बढ़ा ली थी और गेरुए वस्त्र पहन लिए थे। गले में रुद्राक्ष की मालाएँ भी लटकती थीं। जहाँ चार आदमी मिल जाते वहीं वह व्याख्यान देने लगता—

"भाइयो और बहनो! हमेशा सच बोलो! किसी को ठगो मत! हमेशा दान धर्म करते रहो। धन का लोभ छोड़ दो और अपने पराए का भेद भूल जाओ। हमेशा कर्तव्य का ध्यान रखो। कर्म करो, मगर फल की आशा न रखो। कर्म के फल का भार स्वामी भोजनानन्द पर छोड़ दो। वही तुम्हारी नैया खेकर पार पहुँचा देंगे। इसी राह पर चलने से तुम तर सकते हो।" इस तरह स्वामी भोजनानन्द जब व्याख्यान झाड़ने लगते तो सुनने वाले, क्या बच्चे, क्या बूढ़े, क्या औरत, क्या मर्द, सभी सुध-बुध खो बैठते और एक स्वर से 'स्वामीजी की जय' बोलने लगते। दुनिया के काम-काज से उनका जी उचट जाता और उनमें से ज्यादातर लोग स्वामीजी के चेले बन जाते।

जब इस तरह से बहुत लोग उसके चेले बन गए तो उसने भगवान की पूजा के बहाने उनसे बहुत सा रुपया जमा कर लिया। इस रुपए से उसने भगवान की एक सोने की ठोस मूर्ति बनवा कर अपनी झोली में छिपा ली।

इस बगुला-भगत का बनावटी रूप देख कर सब लोग धोखा खा गए। वे सब आपस में एक दूसरे से कहते—"हमारे स्वामीजी तो मानों भगवान के अवतार हैं। देखो न,

रामप्रसाद त्रिपाठी

उन्हें धन तथा रूप का मोह छू तक नहीं गया है। सचमुच हमारे भाग से ही ऐसे गुरू हमें मिल गए।"

इस तरह थोड़े ही दिनों में उसका नाम छोटे-छोटे गाँवों में भी फैल गया। बहुत से धनी-मानी लोग उसके चेले बन गए। जहाँ देखो, वहीं स्वामीजी की चर्चा होने लगी। अब लोगों में उन्हें अपना मेहमान बनाने के लिए होड़-सी होने लगी। सभी उन्हें अपने घर बुलाना चाहते। हर कोई उन्हें अपने घर खिला-पिला कर आसानी से तर जाना चाहता था। और स्वामीजी भी ऐसे दयालु थे कि किसी को निराश करना नहीं चाहते थे। लेकिन बेचारे करते क्या! उनके पास काफ़ी समय न था।

स्वामीजी बहुत से गाँवों में घूमे। कितने ही अमीर लोग स्वामीजी को भोजन करा कर बड़ी आसानी से तर गए। भला, स्वामीजी के सिवा यह काम और कौन कर सकता था!

आखिर एक दिन स्वामी जी के एक ग़रीब चेले की बारी आई। उसका न्यौता स्वामीजी ने स्वीकार कर लिया। इससे बढ़ कर और क्या हो सकता था! लेकिन वह बेचारा बहुत ग़रीब था। उसे कोई उपाय न सूझा कि वह उन्हें क्या खिलाये? अगर स्वामीजी की सेवा में कोई त्रुटि रह गई तो डूब मरने के लिए फिर कहीं चुल्लू भर पानी तक न मिलेगा। अगर स्वामीजी का रोंआ दुखेगा तो उसे कितना बड़ा पाप लगेगा! आखिर किसी न किसी तरह उसने भोजन का सारा प्रबन्ध कर लिया। स्वामीजी जीमने के लिए आए तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। ऐसा तर-माल तो उन्हें बड़े-बड़े अमीरों के घर से भी न मिला था। उन्होंने

खाने-पीने के बाद पूछा—"बेटा! हमने तो सुना था कि तुम बड़े ग़रीब हो! फिर तुमने ऐसा राजसी भोग कहाँ से जुटाया?"

चेला सिर झुका कर बोला—"यह सब स्वामीजी की कृपा है।"

स्वामीजी ने मन ही मन सोचा—"मालूम होता है इस पर हमारे व्याख्यानों का जादू खूब चढ़ा है।" उन्होंने चेले से कहा—"बेटा! तुम्हारी सेवा, विनय और शील देख कर हम बहुत प्रसन्न हो गए हैं। इसलिए हमारी यह इच्छा है कि और दो चार दिन यहीं ठहर कर तुम्हारे मन को आनन्द पहुँचावें।"

यह सुन कर उसके दूसरे सब चेले अचरज में पड़ गए। उन्होंने सोचा—"स्वामीजी तो बड़े-बड़े अमीरों के घर भी एक-दो दिन से ज्यादा नहीं ठहरते। सचमुच यह बड़ा भाग्यशाली है। नहीं तो इसकी झोंपड़ी में स्वामीजी क्यों ठहरना चाहते!"

लेकिन स्वामीजी की यह बात सुनते ही उस ग़रीब के सिर पर पहाड़-सा टूट पड़ा। यहाँ तो एक ही दिन की दावत में उसका दिवाला निकल गया था। फिर चार दिन तक स्वामी जी को वह क्या खिलाएगा?

आख़िर किसी तरह उस बेचारे ने अपने आप को ढाढ़स बँधाया। उसे स्वामीजी का उपदेश खूब याद था। स्वामी जी ने कहा था—"अपने पराए का भेद भुला दो। कर्म करो, मगर फल का भार स्वामी भोजनानन्द पर छोड़ दो।" उसने आज इन बातों को याद किया।

उस ग़रीब के घर स्वामीजी चार दिन ठहरे। राजा-महाराजाओं के घर भी

उनकी वैसी आव-भगत नहीं हुई थी। स्वामी जी उस चेले से बहुत खुश हुए। उन्होंने उसे अनगिनत आशीष दिए। लेकिन उनके मन में बार-बार अचरज होता।

वे बार-बार उससे पूछते—"बेटा! हमने तो सुना था तुम बड़े ग़रीब हो। फिर तुमने इतनी धूम-धाम से हमारी सेवा-टहल कैसे की!"

चेला हर बार यही जवाब देता—"यह सब स्वामीजी की कृपा है। नहीं तो मेरी बिसात ही क्या!"

चार-पाँच दिन हो जाने के बाद स्वामी जी वहाँ से चलने लगे। जाने के पहले उन्होंने अपने चेले को बुला कर डेढ़-दो घंटे तक लम्बा उपदेश दिया। सब कुछ सुन कर चेले ने इतना ही कहा—"सब स्वामीजी की कृपा है।"

राह में थोड़ी दूर चलने के बाद स्वामी जी के मन में एक खटका पैदा हुआ। जाने क्यों, उन्हें अपनी झोली बहुत हल्की मालूम हुई।

उन्होंने थरथराते हाथों से झोली खोली और टटोल कर देखा। सोने की मूर्ति हाथ आई। अरे—इतनी हल्की! बाहर निकाल कर उलटा-पुलटा तो मालूम हुआ कि मूर्ति अन्दर से खोखली हो गई है; पँसेरी भर सोने में से सिर्फ़ चार-पाँच तोला ही बच गया है। स्वामीजी की आँखों के आगे अँधेरा छा गया और उन्होंने मन ही मन कहा—"मैंने आज तक लाखों को उपदेश दिया और हजारों को मुक्ति पाने का उपाय बतलाया। लेकिन आज मुझे एक ऐसा चेला मिला जिसने मेरी आँखों की पट्टी खोल दी और मुझे मुक्ति का मार्ग दिखा दिया।"

एक गाँव में एक बूढ़ा रहता था। उसका नाम क्या था यह तो मुझे नहीं मालूम। लेकिन गाँव के लोग उसे 'बाबा' कहते थे। बाबा बड़ा विद्वान, बुद्धिमान और दयावान था। उस गाँव के सब लोग उसका बड़ा सम्मान करते थे। उस गाँव का मुखिया भी वही था। गाँव के छोटे बच्चे बाबा को बहुत प्यार करते थे। बाबा को देखे बिना और उससे कुछ बात किए बिना बच्चों को कल नहीं पड़ती थी।

उस गाँव के सब लोग बाबा को अपने पिता के समान मानते थे। अगर किसी को कोई तकलीफ़ होती तो वह दौड़ा-दौड़ा बाबा के पास पहुँच जाता था। बाबा भी सबको अपने बच्चों के समान समझता और उनकी मदद करता रहता था। उसकी सलाह के बिना गाँव का कोई काम नहीं होता था। बाबा बिल्कुल अकेला था। न कोई बीबी, न बाल-बच्चे।

बाबा हमेशा कुछ न कुछ पढ़ता-लिखता रहता था। उसे अच्छे-अच्छे ग्रंथों से बड़ा प्रेम था। इसीलिए उसने गाँव से थोड़ी दूर एक ऊँचे टीले पर अपना घर बना लिया था। वहाँ कई अलमारियों में उसकी किताबें जतन से रखी रहती थीं। बच्चो! यह न समझना कि उसकी किताबें तुम लोगों की किताबों की तरह छपी हुई होती थीं। नहीं, उस ज़माने में छापे-ख़ाने थे कहाँ? उस समय किताबें हाथ से ही लिखी जाती थीं। इसीलिए इस में बहुत मेहनत लगती थी और उनका दाम भी बहुत ज़्यादा होता था। एक एक किताब ख़रीदने में बहुत-सा रुपया लग जाता था। बाबा की सभी किताबें बहुत बेशक़ीमती थीं।

शोभा देवी

बाबा के बैठक-खाने से हरे-भरे खेत और मैदान दिखाई देते। वह दृश्य ऐसा लगता था मानों हरी मखमली कालीन बिछा दी गई हो। खेतों में हमेशा किसान लोग काम करते हुए दिखाई देते। बाबा यह सब देखते एक किताब लेकर बैठ जाते और फिर तन मन की सुध भूल जाते।

जिस टीले पर बाबा का घर था, उस के नीचे ही गाँव बसा था। गाँव के एक छोर पर एक नदी बहती थी। गाँव की जमीन की सतह नीची थी। इसलिए नदी के उस किनारे पर पानी को रोकने के लिए पत्थरों का एक बड़ा बाँध था। एक दिन दोपहर को बाबा घर में बैठे-बैठे एक किताब पढ़ रहे थे कि अचानक उनकी नजर नदी के बाँध पर पड़ी। बाबा जानते थे कि बाँध एक जगह कमजोर हो गया था। उसकी मरम्मत भी की गई थी। लेकिन न जाने क्यों, उसमें फिर से दरारें पड़ गईं थीं। बाबा ने देखा, उन्हीं दरारों से पानी धीरे-धीरे बाहर निकल रहा है। बाबा जान गए कि थोड़ी ही देर में वह दरार बड़ी हो जाएगी और एक घण्टे में बाँध टूट जाएगा। उन्होंने तुरंत किताब बन्द कर दी।

बाबा बड़े सोच में पड़ गए। गाँव वाले औरत-मर्द सभी खेतों में काम करने चले गए थे। घरों में बच्चों, बूढ़ों और अपाहिजों के सिवा और कोई न थे। उन बेचारों को स्वप्न में भी बाँध टूटने की आशङ्का न हुई थी। थोड़ी ही देर में अब बाँध टूटेगा और सारा गाँव बह जाएगा। तो इन अबोधों को डूबने से कैसे बचाया जाय! बाबा के सामने यही सवाल था। बाबा बूढ़े थे। वह खुद खेतों में जाकर सबको सूचित नहीं कर सकते थे।

खबर देने के लिए पास में और कोई था नहीं। बाबा के घर के आस-पास कोई घर भी नहीं था। और इतना समय भी कहाँ था! न जाने, बाँध कब टूट जाए। तो फिर किया क्या जाय!

सोचते-सोचते बाबा ने फिर एक बार दरार की ओर देखा। दरार तब तक और भी चौड़ी हो चुकी थी। पानी और भी तेजी से बहने लग गया था।

बाबा ने तुरन्त रसोईघर में जाकर थोड़ी सी आग ले ली। सबसे पहले झटपट उसने प्राणों से भी प्यारी अपनी किताबों में आग लगा दी। बाद घर के पिछवाड़े में पड़ी पुआल की ढेरी को फूँक दिया। कुछ क्षण में टीले के चारों ओर धुँआ ही धुँआ छा गया और लपटें भड़क उठीं।

टीले पर से धुँए के घटा-टोप बादल उमड़ते देख खेतों में काम करते हुए लोग चिल्लाते हुए दौड़ पड़े—"दौड़ो! दौड़ो! हाय रे, बाबा के घर में आग लग गई। दौड़ो! दौड़ो!" सारा गाँव टीले पर जमा हो गया और आतुरता से आग बुझाने की कोशिश करने लगे।
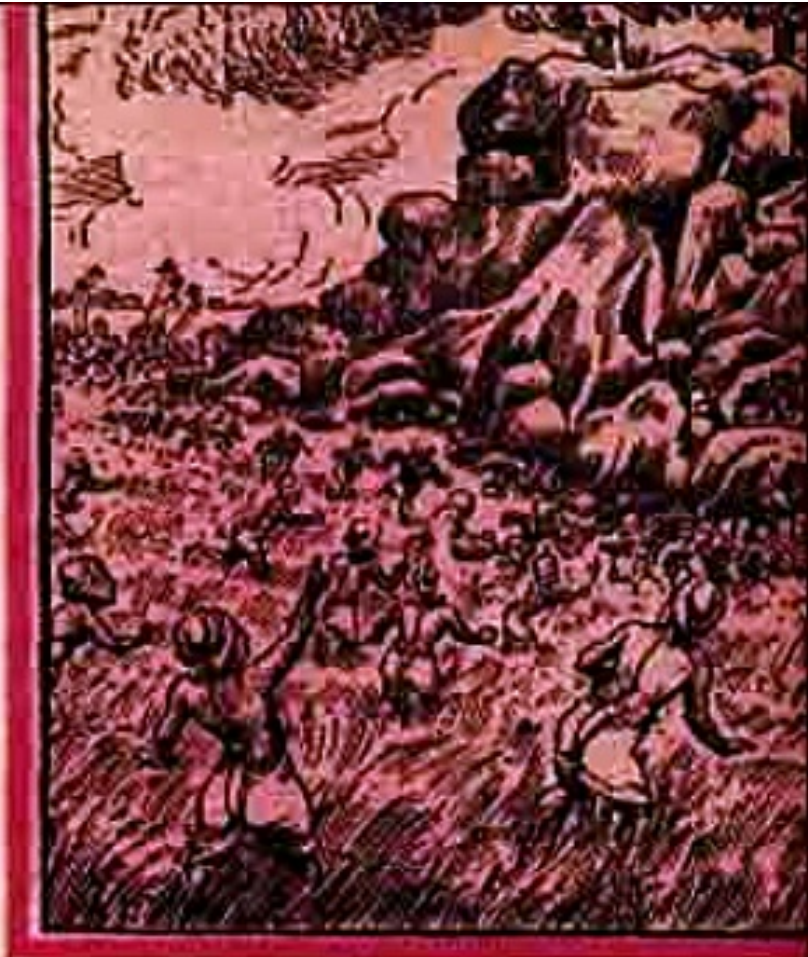
लेकिन बाबा ने लोगों को डाँट कर कहा—"चिल्लाओ मत! बेकार हल्ला मत करो। जो मैं कहता हूँ, मुस्तैदी से करो। दौड़ कर घर जाओ। बच्चे, बूढ़े, माल-मवेशी जो कुछ घर में हों, सब को झटपट लाकर इस टीले पर इकट्ठा कर दो। देखना, घर में कोई छूट न जाय। तुरन्त जाओ! एक पल भी देर न करो। समय नहीं है। पीछे सब कुछ बता दूँगा।"

यह सुन कर सब लोग पसो-पेश में पड़ गए। लेकिन किस की मजाल थी जो बाबा का हुक्म टालता! सबों को खूब

मालूम था कि बाबा कभी झूठ नहीं बोलता और उसकी हर बात में कोई गूढ़ अर्थ जरूर रहता है। इसलिए लोगों ने जरा भी देरी न की। दौड़े-दौड़े अपने घर गए और बच्चों, बूढ़ों, माल-मवेशियों, सब को टीले पर ले आए। कोई पीछे नहीं छूटा। बाबा का मतलब किसी की समझ में नहीं आता था। सब लोग अचरज में पड़े हुए थे। इतने में बाबा ने बाँध की तरफ उँगली उठाते हुए कहा—"जरा उधर तो देखो!"

बाबा की बात पूरी भी न हुई थी कि भयंकर आवाज के साथ वह बाँध टूट गया। बाँध का टूटना था कि नदी का पानी उछला और सारा गाँव डूब गया।

अब बाबा की बातें सबकी समझ में आ गईं। बाबा ने उनको बचाने के लिए कितना बड़ा त्याग किया था, यह भी उनको मालूम हो गया। बाबा के प्रति उनकी श्रद्धा सौगुनी बढ़ गई। जब लोग जान गए कि बाबा ने उनको बचाने के लिए अपनी जान से भी प्यारी किताबों में खुद अपने हाथों से आग लगाई थी, तब उनकी विह्वलता की हद न रही। वे फूट-फूट कर रोने लगे।

तब बाबा ने कहा—"भाइयो! रोओ नहीं। यह सच है कि मैं उन किताबों को बहुत प्यार करता था। लेकिन तुम लोगों की जान बचाने के लिए, किताब क्या, अपनी जान तक दे सकता हूँ। मेरे लिए यही सबसे बड़ी खुशी की बात है कि तुम सब लोग इस तरह बाल-बाल बच कर यहाँ आ गए।"

कुछ दिन बाद जब वह गाँव फिर से आबाद हुआ तो उसका नाम पड़ा 'बाबानगर।'

शक्की राजा

एक शहर में एक राजा रहता था। वह बड़ा शक्की था। अपनी इस कमज़ोरी के कारण वह कभी-कभी बड़ी मुसीबत में पड़ जाता था। उसी शहर में बाबूराम नाम का एक बड़ा धूर्त रहता था। वह अपने को बड़ा भारी ज्योतिषी कहता था और लोगों को ठगता फिरता था। लेकिन वास्तव में वह ज्योतिष-विद्या बिल्कुल नहीं जानता था। पर अपनी चतुराई से वह थोड़े ही दिन में मशहूर हो गया। उसको राजा ने भी अपना दरबारी ज्योतिषी बना लिया।

एक बार उस राज में अकाल पड़ा। राजा ने ज्योतिषी को बुला कर पूछा—'बताओ! यह अकाल कैसे दूर हो सकता है?'

ज्योतिषी ने थोड़ी देर तक सोच-विचार कर जवाब दिया—'आप अकाल की कुछ चिंता न कीजिए। उससे भी एक बड़ी भारी मुसीबत इस राज पर आने वाली है। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि कोई पड़ोसी राजा शीघ्र ही इस राज पर चढ़ाई करने वाला है।" यों कहते-कहते वह बीच में ही रुक गया। राजा तो शक्की था ही! ज्योतिषी की बातें सुन कर वह और भी घबरा गया और पूछने लगा—"तुम्हारे पोथी-पत्रे और क्या कहते हैं? बताओ तो!" "पत्रा बताता है कि आगे बहुत बुरे दिन आने वाले हैं। आपकी जन्म-पत्री तो कहती है कि आपको अपना राज-पाट खोकर जङ्गल में छिप कर रहना पड़ेगा। मैं भी इसी के बारे में सोच रहा हूँ।" बाबूराम ने बहुत भय दिखाते हुए कहा।

यह सुन कर राजा को इतनी चिन्ता हुई कि वह बीमार पड़ गया। उसकी बीमारी की खबर सुन कर पड़ोस का एक राजा सचमुच ही चढ़ आया। राजा ने फिर बाबूराम की राय माँगी। बाबूराम ने कहा—"जन्म-पत्री के अनुसार तो आपको जङ्गल में जाकर

रहना ही है। इसलिए चुपके से भाग जाइए तो बेहतर हो।" उसकी ये बातें सुन कर बेवकूफ़ राजा बहुत-सा धन साथ लेकर चुपके से जङ्गल की तरफ़ भाग गया। इस तरह पड़ोसी राजा ने बड़ी आसानी से उस राज पर कब्ज़ा कर लिया।

राजा तो अब जङ्गलों की ख़ाक छानने लगा और धूर्त ज्योतिषी शहर में मौज मार रहा था। नए राजा की ख़ुशामद करके वह दरबारी ज्योतिषी बना रहा।

इतना ही नहीं, उसने नए राजा के ऐसे कान भरे कि वह पुराने राजा को जान से मरवा डालने की धुन में पड़ गया। उसने ऐलान किया कि 'जो उस भगोड़े राजा का सिर काट कर ले आएगा, उसे बड़ा भारी इनाम दिया जाएगा।' यह सुन कर ज्योतिषी का मन ललचा गया और वह सोचने लगा कि किसी न किसी तरह उस राजा का सिर काट कर इनाम पाना चाहिए।

इसलिए वह दरबार से कुछ दिन की छुट्टी लेकर उस जङ्गल में पहुँचा, जहाँ उसका पुराना मालिक बड़े कष्ट से अपने दिन काट रहा था। राजा के पास जाकर उसने ऐसी सूरत बनाई जैसे सचमुच ही वह राजा की हालत पर तरस खा रहा हो। उसने झूठ-मूठ कह दिया—'मुझे नए राजा ने शहर से निकाल दिया है।' बेचारे राजा को उसकी बातें सुन कर बड़ा तरस आया।

बाबूराम वहीं जङ्गल में रहने लगा जिससे राजा को उस पर पूरी तरह विश्वास हो। वह हमेशा राजा के साथ रहता और कभी अलग नहीं होता था।

एक दिन राजा अपने मन्त्री और बाबूराम के साथ जङ्गल में घूमने निकला। कुछ दूर जाने पर राजा को बड़े जोर की प्यास लगी। वहीं नज़दीक में एक कुँआ था। बाबूराम ने एक बाल्टी से पानी भर कर राजा को पीने के लिए दिया। राजा बाल्टी उठा कर पीने

लगा तो उसे पानी में पेड़ की डाल पर बैठी हुई गिल्हरी की परछाई दीख पड़ी। जब बाल्टी में पानी न रहा तो परछाईं भी जाती रही। राजा तो सक्की मिजाज़ का था ही। अब उसे शक हो गया कि पानी के साथ साथ गिल्हरी भी उसके पेट में चली गई है। वह बहुत घबराया। उसने ज्योतिषी से यह बात कही। ज्योतिषी ने तुरन्त हाँ में हाँ मिलाई। "हाँ महाराज! मैंने भी अपनी आँखों से देखा था। गिल्हरी ज़रूर आपके पेट में चली गई है। नहीं तो वह जाएगी कहाँ! उसके पर तो नहीं हैं!" यह सुन कर राजा और भी घबरा गया। उसे सचमुच ऐसा लगा जैसे पेट में बड़े ज़ोर से दर्द हो रहा है। लेकिन मन्त्री वहीं खड़ा खड़ा ज्योतिषी की सारी चालबाज़ी देख रहा था।

थोड़ी ही देर में हकीम-वैद्य आए और उन्होंने राजा को कै कराने के लिए एक दवा दी। उसी समय संयोग से पेड़ पर से एक गिल्हरी नीचे गिरी। यह देखते ही राजा ने सोचा कि गिल्हरी उसी के पेट से निकल गई है। बस, उसके पेट का सारा दर्द दूर हो गया और वह बिलकुल चङ्गा हो गया।

तब मन्त्री ने राजा से ज्योतिषी की सारी पोल खोल दी। उसने उसके मन में अच्छी तरह जमा दिया कि इसी की बदमाशी के कारण उसको अपने राज-पाट से हाथ धोना पड़ा है। राजा भी अपनी बेवकूफ़ी पर बहुत पछताया।

कुछ दिन बाद मन्त्री ने जँगली लोगों को जमा कर एक बड़ी फौज़ बनाई और राजा का खोया हुआ राज्य फिर से जीत लिया। उस धूर्त ज्योतिषी को बन्दी-खाने में सड़ना पड़ा।

धीरे-धीरे राजा का स्वभाव भी बदल गया। फिर उसने कभी ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास न किया।

भेड़िया

बच्चो! क्या तुम भेड़िया-धसान के मानी जानते हो? क्या तुमने कभी भेड़ों के झुण्ड को जाते देखा है? एक भेड़ जिस ओर चल देती है, सभी भेड़ें उसी ओर चलने लगती हैं। कोई भेड़ अगर कुएँ में धँस जाए, तो दूसरी भेड़ें भी आँख मूँदे धँस जाएँगी। इसलिए भेड़िया-धसान का मानी होता है—'आँख मूँद कर दूसरों के पीछे चलना।'

जानते हो—भेड़िया-धसान सिर्फ भेड़ों में ही नहीं, आदमियों में भी पाई जाती है। इसकी कहानी सुनाता हूँ—सुनो।

एक समय एक राजा था। उसका मन्त्री बड़ा समझदार था और नाम भी था उसका 'बुद्धिमान'। एक दिन राजा ने अपने मन्त्री को बुला कर पूछा—'भेड़िया-धसान' का मतलब क्या है?" मन्त्री ने थोड़ी देर तक सोच कर कहा—"हुजूर, मुझे दो दिन की मोहलत मिले तो मैं इसका जवाब दे सकूँगा"। राजा ने दो दिन की मोहलत दे दी।

मन्त्री दूसरे दिन तड़के उठा। नहा-धो कर तिलक लगाया और गाँव के बाहर तालाब के किनारे चला गया। वहाँ कई खच्चर चर रहे थे। मन्त्री ने उनमें से एक की तीन बार प्रदक्षिणा की और उसका एक बाल नोच कर कान पर रख लिया। तालाब के किनारे कुछ लोग जमा हो गए थे। एक ने पूछा—'मन्त्री महाराज! यह आप क्या कर रहे हैं?'

"यह खच्चर काशीजी की यात्रा कर आया है। पहले जन्म में कोई ऋषि-मुनि

रूपकुमारी

धसान

रहा होगा। देखते नहीं, उसकी आँखों से भक्ति टपकी पड़ती है!"—मन्त्री ने जवाब दिया। बस, एक-एक करके सब लोग उसकी प्रदक्षिणा करने और उसका एक-एक बाल नोच कर कानों पर रखने लगे। गाँव-भर में सन-सनी सी दौड़ गई। सभी लोग वही करने लगे जो मन्त्री ने किया था। थोड़ी ही देर में उस खच्चर के सारे बाल नुच गए। वह लहू-लुहान हो गया और तड़पने लगा। इतने में राजा को भी यह खबर लगी और वह भी वहाँ आया। वहाँ पहुँच कर उस ने भी खच्चर की तीन बार प्रदक्षिणा की और खोज ढूँढ़ कर एक बाल नोच लिया। बेचारा खच्चर मौत का मेहमान हो गया।

इतने में खच्चर वाला आया और खच्चर को मरा पड़ा देख हाय-तोबा मचाने लगा। वह राजा के पास अपनी शिकायत ले आया—"दुहाई सरकार की! मैं बाल-बच्चों वाला आदमी हूँ। बड़ा ग़रीब हूँ। किसी तरह इस खच्चर पर माल लाद कर उस किराए के रुपए से पेट पालता था। खच्चर तो मर गया। अब उसका दाम कौन देगा!"

राजा ने मन्त्री को बुला कर सलाह पूछी। मन्त्री ने कहा—"आप भेड़िया-धसान का मानी जानना चाहते थे न! देखिए—यही भेड़िया-धसान है। अब तो आपने अपनी आँखों से देख लिया न! कहिए, भेड़िया-धसान का मानी समझ गए!"

राजा मन्त्री की बात सुन कर बहुत खुश हुआ।

उसने खच्चर वाले को खच्चर का दाम दे दिया।

एक गाँव में एक विद्वान रहता था। सुन्दरता और विद्वता में कोई उसकी बराबरी न कर सकता था। सब लोग उसकी बड़ाई करते थे। लेकिन बड़ों का कहना है कि लक्ष्मी और सरस्वती में नहीं बनती। वह विद्वान भी बड़ा ग़रीब था। वह जो कुछ कमाता था पेट भरने के लिए भी काफी नहीं होता था।

उस विद्वान की स्त्री काली-कलूटी थी। उसे इसका भी बड़ा सोच रहता था। वह मन ही मन कहता—"भगवान! मैं थोड़ा बहुत पढ़ा-लिखा हूँ। लोग मेरी बड़ाई भी करते हैं। लेकिन इन सबसे क्या फ़ायदा जब कि मेरी स्त्री ही काली-कलूटी है! क्या ही अच्छा होता यदि मेरी स्त्री भी दूसरी स्त्रियों की तरह गोरी-गोरी होती!"

एक दिन एक साधु उस विद्वान के घर आया। पति-पत्नी दोनों ने साधु के पाँव पखारे, बड़े प्रेम से उसे खिलाया-पिलाया। खा-पीकर साधु जब बाहर चबूतरे पर बैठा, उस विद्वान ने आकर उसके पाँव छूकर बड़ी नम्रता के साथ प्रणाम किया।

विद्वान की ख़ातिरदारी से खुश होकर उस साधु ने उसे तीन नारियल दिए और कहा—"बेटा! देखो, ये तीन नारियल हैं। इनमें से एक-एक नारियल को फोड़ कर तुम अपने मन में एक-एक चीज़ की कामना करो। ये मामूली नारियल नहीं हैं। इनसे तुम्हारी तीन कामनाएँ पूरी हो जाएँगी।" यह कह कर वह साधु चला गया।

विद्वान ने अन्दर जाकर नारियल अपनी स्त्री को दिखाए और कहा—"ये नारियल साधु बाबा के प्रसाद हैं। इनसे हमारी तीन इच्छाएँ पूरी होंगी। बोलो, सबसे पहले मैं क्या कामना करूँ? मेरी तो पहली चाह है कि तुम गोरी और खूबसूरत बन जाओ।"

करुणकुमार

लेकिन उसकी स्त्री ने कहा—"मेरे सुन्दर बन जाने से ही क्या होता है! यहाँ तो यही फिकर लगी रहती है कि चूल्हे पर हाँडी कैसे चढ़े। इसलिए पहले अमीर होने की कामना कीजिए। पीछे आपका जो जी चाहे पसन्द कर लीजिएगा।"

लेकिन उस विद्वान को स्त्री की बातें पसन्द नहीं पड़ीं। उसने कहा—"क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है! क्या तुम खूबसूरत बनना नहीं चाहती! हमारे पास तीन नारियल हैं। एक को फोड़ने से तुम्हारा रूप बदल जाएगा। फिर दो बच जाएँगे। उनसे हम जो चाहें माँग सकते हैं।" यह कह कर उसने एक नारियल फोड़ा और मन ही मन स्त्री की सुन्दरता चाही। आश्चर्य! नारियल का फूटना था कि विद्वान की स्त्री का रूप बिल्कुल बदल गया। उसका सारा बदन कुन्दन की तरह दमकने लगा। विद्वान की खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपनी स्त्री का रूप देख कर फूला न समाया।

धीरे-धीरे यह बात सारे गाँव में फैल गई। लोग आकर देखते और दाँतों तले उँगली दबाते—"यह कैसा गजब है! कल तक यह कैसी काली-कलूटी थी! और आज अचानक इतनी सुन्दर!" गाँव के लोग-लुगाई विद्वान की स्त्री को देख कर इसी तरह की बातें करते थे।

ये बातें सुन कर विद्वान और भी खुश होता और अपने मन में कहता—"मेरी स्त्री कैसी सुन्दर हो गई! रानियाँ इसके आगे पानी भरेंगी। ओह, मैं कितना भाग्यशाली हूँ! साधू बाबा की कैसी कृपा हुई मुझ पर!" इसी तरह फूला-फूला फिरने लगा।

एक दिन उस विद्वान को किसी काम से कहीं बाहर गाँव जाना पड़ा। उसने अपनी पत्नी को बुला कर कहा—'मैं जरा दूसरे गाँव जा रहा हूँ। दो तीन दिन में लौट आऊँगा। तुम जरा होशियार रहना। घर छोड़ कर इधर-उधर न जाना।' इतना कह कर वह चला गया।

दूसरे दिन वहाँ का राजा घोड़े पर सवार होकर घूमने निकला। घूमते-फिरते वह विद्वान के घर के पास पहुँचा। उसी समय विद्वान की स्त्री ने किसी काम से घर का दरवाजा खोला। उस राजा का चाल-चलन अच्छा न था। उसका नाम सुनते ही वहाँ की औरतें थर-थर काँपने लगती थीं। जब वह घूमने निकलता था तो सभी घरों की खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द हो जाते थे। बेचारी विद्वान की स्त्री को उसके आने की खबर न थी। राजा ने उसको देखते ही घोड़े को रोक लिया। उसका रूप देखते ही उसकी नीयत डोल गई थी। घोड़े से उतर कर वह लपका और जाकर विद्वान की स्त्री का हाथ पकड़ लिया। बेचारी डर के मारे थर-थर काँपने लगी।

"चलो, मेरे साथ रनवास में आराम से रहना। मैं तुम से ब्याह करूँगा और तुम्हें रानी बनाऊँगा" राजा ने कहा।

विद्वान की स्त्री ने कोई जवाब न दिया। वह हाथ छुड़ाने की कोशिश करने लगी। लेकिन राजा उसे जबर्दस्ती घोड़े पर चढ़ा कर अपने गढ़ में ले गया। वहाँ उसने एक सुन्दर महल में उसे कैद कर रखा। फिर सिपाहियों को बुला कर कहा—"देखो, तुम लोग इस महल के आगे पहरा देते

रहना। खबरदार! किसी को महल में घुसने न देना।"

विद्वान की स्त्री दो दिन तक खाना-पीना छोड़ कर रोती-कलपती बैठी रही। अब वह पछताने लगी—"कहाँ से यह साधु आया और नारियल दे गया? उसके पति ने उसे क्यों सुन्दर बनाने की कामना की? न वह सुन्दरी होती और न जान इस आफ़त में पड़ती।"

विद्वान दो दिन बाद जब घर लौटा तो उसे सब हाल मालूम हुआ। राजा का यह अत्याचार देख कर उसकी देह में आग लग गई।

उसने तुरन्त दूसरा नारियल फोड़ा और मन ही मन कहा—'हे भगवान! मेरी स्त्री भालू बन जाय।' वह खूब जानता था कि उस दुष्ट राजा को अपनी करनी का फल मिल जाएगा।

राजा के महल में बैठी विद्वान की स्त्री एकाएक भयङ्कर भालू बन गई। भालू, और भूखा-प्यासा! अब क्या था! भालू ने राज-महल के शीशे, अल्मारियाँ, खिड़कियाँ, किवाड़ और भी बहुत-सी क़ीमती चीज़ें तोड़-फोड़ डालीं। जब तोड़ने-फोड़ने के लिए कोई सामान न बचा तो बैठ कर गुर्राने लगा।

उस रात को राजा खूब बन-ठनकर विद्वान की स्त्री को देखने आया। वह चुपके से चोर की तरह महल के अन्दर घुसा। उसका अन्दर पाँव रखना था कि भालू गुर्रा कर उस पर टूट पड़ा और अपने पैने नखों से उसको चीरने-फाड़ने लगा। राजा ज़ोर से

चीखने-चिल्लाने लगा। लेकिन उसकी पुकार सुनने वाला वहाँ था कौन? पहरेदार सब पहले ही भाग गए थे। भालू ने राजा की जान ले ली। इस तरह उसे अपने पापों का फल मिल गया।

कुछ देर बाद पहरेदार लोग बहुत से सिपाहियों को बुला लाए। उन सब ने अंदर जाकर देखा तो राजा मरा पड़ा था। इतने में भालू उन पर भी टूट पड़ा। बस, सब लोग अपनी जान लेकर सिर पर पाँव रख कर भगे। भालू महल में से गुर्राता हुआ निकला और विद्वान के घर चला।

भालू को देख कर विद्वान को बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा—"हाय! मेरी स्त्री को कितने कष्ट उठाने पड़े? आख़िर उसकी सुन्दरता ही उसकी दुर्दशा का कारण बनी। वह काली-कलूटी ही बनी रहती तो कितना अच्छा होता? तब तो हमें ये सब कष्ट नहीं उठाने पड़ते।"

यह सोच कर उसने तीसरा नारियल निकाला और फोड़ते हुए मन ही मन कहा—'मेरी स्त्री का रूप फिर पहले-सा हो जाय।' तुरन्त उसकी पत्नी भालू का रूप छोड़ कर फिर पहले जैसी हो गई। अब विद्वान को बड़ी खुशी हुई। उसने कहा—"ये नारियल ही सारी खुराफात की जड़ थे। अगर हमें अपने भाग्य पर सन्तोष होता तो इतने कष्ट झेलने नहीं पड़ते।" यह कह कर वह अपनी स्त्री को समझाने-बुझाने लगा। उस दिन से वे बड़े सुख से रहने लगे।

विधि का लिखा...

पुराने ज़माने में एक राजा था। उसकी इकलौती बेटी का नाम सुशीला था। राजा ने उस लड़की को बड़े लाड़-प्यार से पाला। उसे किसी चीज़ की कमी न होने दी। लेकिन जब वह लड़की सयानी हो गई तो राजा और रानी में झगड़ा उठ खड़ा हुआ।

राजा ने कहा—"मैं अपने भांजे * से इसका ब्याह करूँगा।" पर रानी ने इसका विरोध किया। उसके एक भतीजा था। वह बहुत दिनों से उससे सुशीला के ब्याह की बात सोच रही थी। इसलिए उसने कहा—"यह तो कभी नहीं हो सकता। मैं इसका ब्याह अपने भतीजे से करूँगी।"

इसी तरह दोनों में कई बार कहा-सुनी हो गई। तब एक दिन राजा ने बिगड़ कर कहा—"मैं राजा हूँ। किसकी मज़ाल जो मेरा हुक्म तोड़े! लड़की मेरी है। मैं जिससे चाहूँगा उसका ब्याह कर दूँगा।" यह कह कर राजा ने उसी दिन अपने भांजे को बुला भेजा। उसके आने पर राजा ने उसे एक महल में छिपा दिया ताकि रानी उसको देख न ले। पुरोहित ने आकर पोथी-पत्रा उलट कर मुहूर्त निश्चय किया और ब्याह की तैयारियाँ होने लगीं।

इधर रानी यह सब देखती चुपचाप कैसे बैठी रहती! उसने सोचा—"मैंने उसको जन्म दिया है। पाल-पोस कर बड़ा किया है। फिर उसके ब्याह के बारे में मेरा हक़ न हो तो और किसका होगा! अपमान की यह घूँट चुपचाप कैसे पी जाऊँ!" यह कह कर उसने गुप्त रूप से अपने भतीजे को बुला लिया और एक महल में छिपा दिया।

दोनों दूल्हे अलग-अलग महल में छिपे अपने भाग्य पर इठला रहे थे—'राजकुमारी मेरी

* 'भांजे से ब्याह'—भोले पाठक चौंकें नहीं। दक्षिण में भाई-बहन की संतान में ब्याह प्रचलित है। —संपादक

धीरेन्द्रनाथ

माथे पर लिख देते हैं; और जैसा लिखते हैं वैसा ही होता है। इसीलिए महेश ने ब्रह्मा से यह सवाल किया।)

'इन दोनों में से किसी के साथ उसका ब्याह न होगा।' ब्रह्मा ने जवाब दिया।

यह सुन कर महेश को बड़ा अचरज हुआ और उन्होंने पूछा—"तो फिर इस लड़की का ब्याह किसके साथ होगा?"

तब ब्रह्मा ने भैंसे पर चढ़ कर सड़क पर जाते हुए एक लँगड़े की तरफ़ उँगली उठाई और कहा—"वही लँगड़ा इस लड़की का पति बनेगा।"

होगी! मैं उसका पति बनूँगा!' उनके लिए एक एक पल एक-एक युग के समान बीत रहा था।

उसी समय ब्रह्मा, विष्णु और महेश भूमण्डल का भ्रमण करने निकले और घूमते फिरते उस नगर के नज़दीक पहुँचे। जब विष्णु और महेश को इन दोनों दूल्हों की बात मालूम हुई तो उन्होंने ब्रह्मा से पूछा—"इन दोनों में से किसके साथ इस लड़की का ब्याह होने जा रहा है?" (बच्चो! तुम तो जानते ही हो कि भूमण्डल में जो कुछ होने वाला है, जिस के भाग्य में जो बदा रहता है, ब्रह्मा यह सब पहले ही से जानते हैं। क्यों न जानेंगे! वही तो हमारे

यह सुन कर महेश को बड़ा अचरज हुआ और दुख भी। "वाह, इन दो सुन्दर राजकुमारों को छोड़ कर इस लँगड़े के साथ राजकुमारी का ब्याह होगा! नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता!" उन्होंने कहा।

"इस लड़की के ललाट में जो कुछ लिखा है, वही होगा। इसमें कुछ अदल-बदल नहीं हो सकता।" ब्रह्मा ने जवाब दिया।

"यही देखना है कि अदल-बदल कैसे नहीं होता है!" यह कह कर महेश ने विष्णु से कहा—"ज़रा आप मेरे वृषभ पर बैठ जाएँ। मैं गरुड़ से एक काम लेना चाहता हूँ।" विष्णु तुरन्त गरुड़ पर से उतर कर

महेश के साथ वृषभ पर बैठ गए। तब महेश ने गरुड से कहा—"देखो, गरुड! यह लंगड़ा जो भैंसे पर चढ़ा आ रहा है, तुम उसे अपने चंगुल में दबोच कर सात समुन्दर पार बीहड़ जंगल में छोड़ आओ।" यह सुन कर गरुड उड़ा और एक ही झपटे में उस लंगडे को उठा कर सात समुन्दर पार एक बीहड़ वन में छोड़ आया।

महेश ने विष्णु से कहा—"अब देखना है कि उस लंगडे से सुशीला का व्याह कैसे होता है!"

देवताओं के लिए तो यह एक तमाशा हुआ; पर बेचारे लंगड़े की जान पर ही आ गई। वह आज तक घर घर भीख माँग कर किसी तरह पेट पालता आ रहा था। लेकिन अब इस घोर जंगल में भीख कौन देगा? वहाँ उसका रोना कौन सुनता? गरुड़ उसे एक जंगल में नहीं, बल्कि मौत के मुँह में डाल गया था। थोड़ी ही देर में वह भूख से छटपटाने और भगवान का नाम लेकर हाय! हाय! करने लगा। आख़िर उसकी पुकार देवताओं के कान में पड़ी। विष्णु ने तरस खाकर गरुड से कहा—"उस बेचारे लंगड़े की जान जा रही है। तुम एक टोकरी पकवान ले जाकर उसके सामने रख आओ। नहीं तो उस निर्दोष की हत्या का पाप हमारे सिर पड़ेगा।"

विष्णु की आज्ञा पाते ही गरुड पकवान ढूँढने चला गया। थोड़ी दूर भटकने के बाद उसे राजा के महल में दो झावे दीख पड़े। उनमें से पकवानों की मीठी महक आ रही थी। गरुड ने झट उन झावों को उठा लिया और सात समुन्दर पार गहन वन में लंगड़े के सामने रख दिया। फिर वहाँ से लौट कर विष्णु के पास आ गया।

लंगड़े ने बड़ी उतावली से एक झावे का मुँह खोला। खोलते ही उसमें से एक सुन्दर राजकुमारी निकली और उसने उसके गले में

जयमाला डाल दी। लँगड़ा हक्का-बक्का रह गया। मुँह से कोई बात न निकली। वह सिर्फ देखता रह गया। आखिर उसने अपने को सम्हाला और कहा—"मालूम होता है तुम किसी बड़े राजा की लड़की हो। मैं ठहरा एक गरीब लँगड़ा। फिर तुमने मेरे गले में यह माला क्यों डाल दी? इसका क्या मतलब है?"

वह राजकुमारी अपनी राम-कहानी सुनाने लगी—"सचमुच मैं एक राजकुमारी हूँ। मेरी माँ ने अपने भतीजे से मेरा ब्याह करना चाहा। लेकिन मेरे पिता को यह पसन्द न पड़ा। इसलिए मेरी माँ ने मुझे एक झाबे में छिपा दिया। दूसरे झाबे में मिठाई बौरह भर दिए। फिर मुझसे कहा कि 'मैं ये झाबे तेरे दूल्हे के पास भेज दूँगी। ज्योंही वह इस टोकरी का ढक्ना खोले तू उसके गले में वरमाला डाल दे। बस, तुम दोनों का ब्याह हो जाएगा।' यह कह कर माँ चली गई। इतने में कोई इन झाबों को उठा ले चला। मैंने सोचा कि मैं वहीं जा रही हूँ, जहाँ मेरी माँ मुझे भेजना चाहती थी। जब तुमने इस झाबे का मुँह खोला तो मैंने तुम्हारे गले में माला डाल दी।"

राजकुमारी की कहानी सुन कर लँगड़े को बड़ा अचरज हुआ। वह सोचने लगा कि "यह सब भाग्य का खेल है। नहीं तो कहाँ यह सुन्दर राजकुमारी और कहाँ मैं एक कुरूप लँगड़ा!" उसे बड़ी ज़ोर की भूख लग रही थी। बस, गपगप मिठाई उड़ाने लगा।

यहाँ रानी ने देखा कि एक गरुड झाबे उड़ाए लिए जा रहा है। लेकिन वह किससे

कहती! मुँह खोलते ही सारा भेद खुल जाता। वह गुमसुम खड़ी रही।

जब ब्याह की घड़ी नज़दीक आई तो राजा ने दुलहिन को बुला लाने के लिए दासियों को भेजा। लेकिन जब उन्होंने लौट कर कहा कि दुलहिन का कहीं पता नहीं है तो राजा आग बबूला हो गया। उसने तुरंत जाकर रानी से पूछा—"सुशीला कहाँ है?"

रानी ने मुँह बिगाड़ कर कहा—"मैं क्या जानूँ! जब से आपने कह दिया कि तुम्हें उसके ब्याह के बारे में बोलने का हक़ नहीं है, तब से मैंने उससे नाता ही तोड़ लिया। जब आपको मेरी बात की परवाह ही नहीं है, तो मैं फ़िज़ूल अपनी टाँग अड़ाने क्यों जाती! जाइए, जहाँ मिले खोजिए और ले जाइए अपनी लाड़ली बेटी को।"

बेचारे राजा को बड़ा दुख हुआ कि यों बात बिगड़ गई। वह उदास मन से राजकुमारी को ढूँढ़ने चल गया।

जब दुलहिन के गायब होने की ख़बर दोनों दूल्हों को मालूम हुई तो वे अपना सा मुँह लेकर वहाँ से भाग गए। उनको यों

चोरों की तरह भागते देख कर महेश ने ब्रह्मा से पूछा—"क्यों, भाई! आख़िर यह क्या हुआ! इन दोनों में से किसी के साथ राजकुमारी का ब्याह नहीं हुआ!"

"कैसे होता, भाई! मैंने तो पहले ही कह दिया था कि उस लड़की का ब्याह उस लँगड़े से होगा। ब्याह हो गया है और इस समय वह लड़की सात समुन्दर पार एक घने जंगल में उस लँगड़े से हँस-खेल रही है।" ब्रह्मा ने मुस्कुराते हुए कहा।

महेश को उनकी बात पर विश्वास न हुआ। उन्होंने कहा—"कहाँ हैं वे? ज़रा जाकर देखें तो सही।"

तीनों देवता पल मारते सात समुन्दर पार घने जंगल में पहुँचे। वहाँ दुल्हा-दुलहिन दोनों को हँसते-खेलते देखा तो उन्हें तरस आ गया। विष्णु ने कहा—"यह राजकुमारी ऐसी सुन्दर है कि देवता भी दंग रह जाएँगे। इसकी सुन्दरता तो सारे जंगल को उजाला दे रही है। ऐसी सुन्दर लड़की का इस बेढंगे लँगड़े के साथ गठ-बंधन कर देना क्या उचित था? अच्छा जो हो गया सो हो गया। 'विधि का लिखा को मेटनहारा!' अब हम इतना करें कि इस लँगड़े को पैर दें और इसको एक सुन्दर राजकुमार बना दें।" यह कह कर विष्णु ने वरदान दिया जिससे वह कुरूप लँगड़ा एक सुन्दर राजकुमार बन गया। ब्रह्मा ने उसकी उम्र बढ़ा दी। महेश ने उसे बुद्धि और बल का वरदान दिया।

"ब्रह्मा जो एक बार लिख देते हैं उसे कोई नहीं मिटा सकता है। ब्रह्मा की क़लम में बड़ी ताक़त है।" महेश ने ब्रह्मा की बड़ाई करते हुए कहा। विष्णु ने फिर गरुड को आज्ञा दी कि इस दंपति को फिर राजमहल में पहुँचा दो। गरुड ने वैसा ही किया। तब तीनों देवता अपने लोक लौट गए।

सुशीला ने अपने माँ-बाप से सारी कहानी कह सुनाई। राजा और रानी दामाद को देख कर बड़े खुश हुए। राजा ने उसे अपना सेनापति बना दिया।

लँगड़ा अब लँगड़ा न रहा, वह बड़ा बहादुर और होशियार हो गया। जो भी देखता, उसके आगे सिर झुकाता और मन ही मन कहने लगता—विधि का लिखा को मेटनहारा!
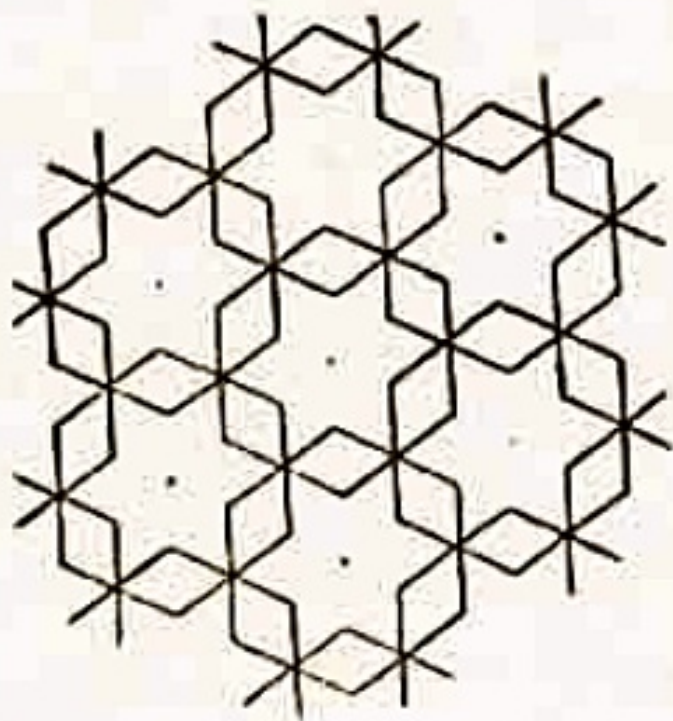
सीता देवी

कुमारी शांता
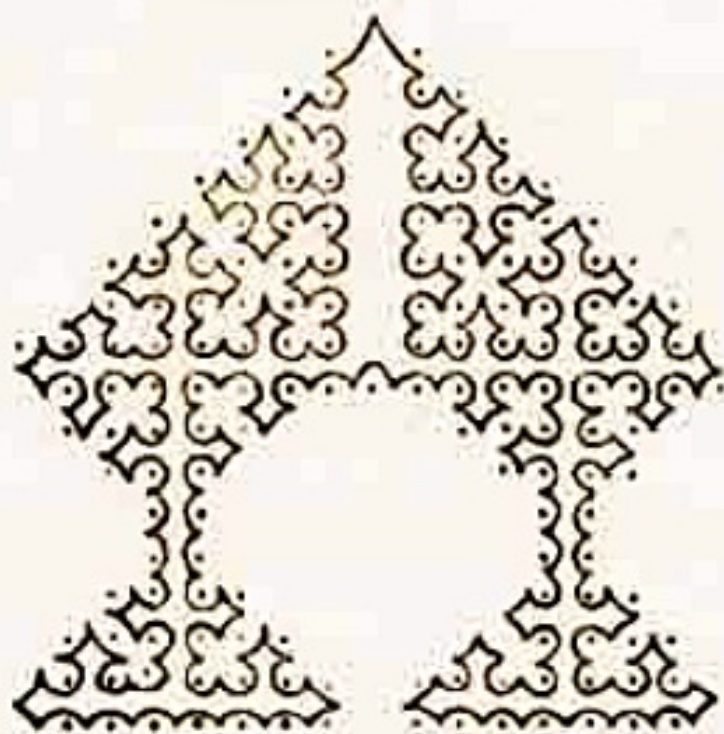
लीला कुमारी
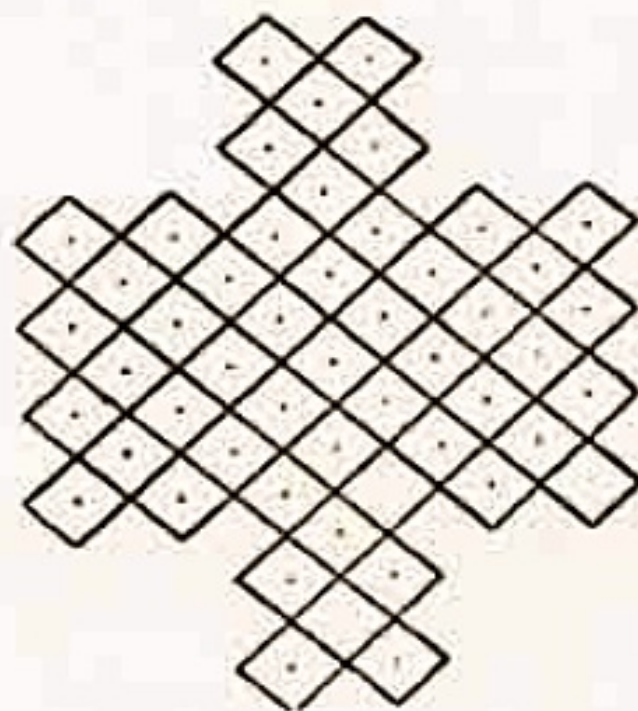
सुशीला

इस बार बगुला बन्दर को एक पहाड़ी झरने के पास ले गया। झरने के बीचों-बीच एक चट्टान थी।
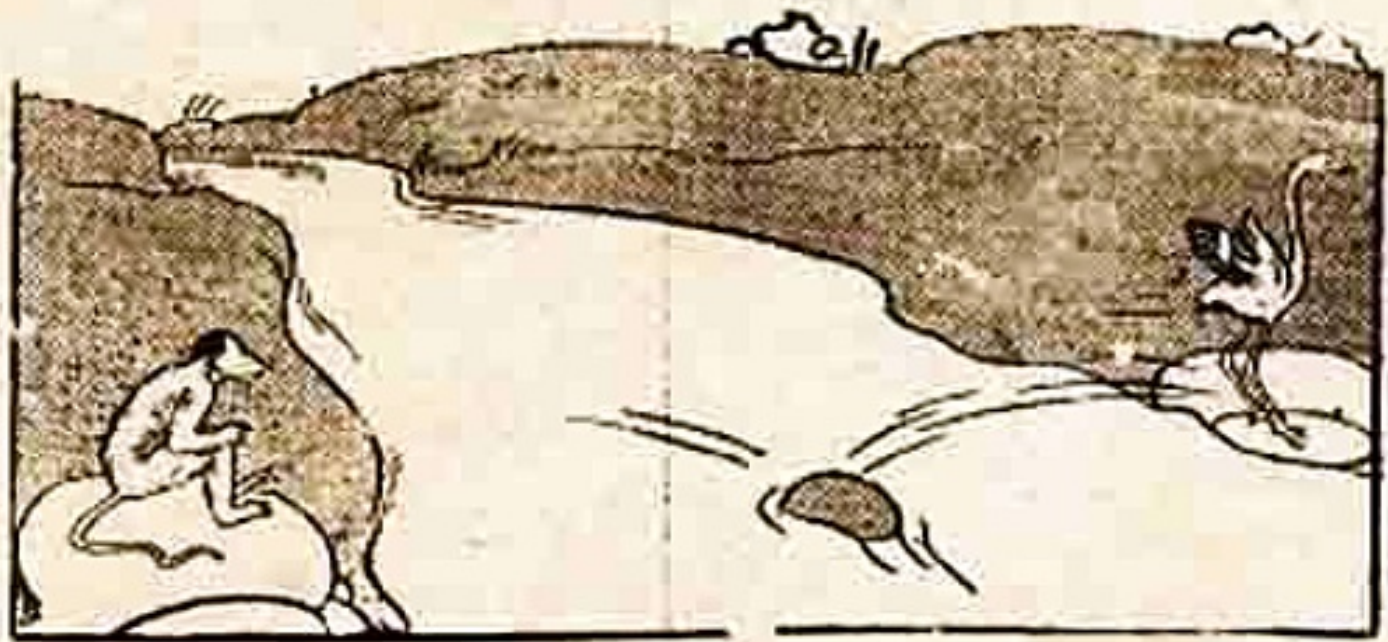
पहले बगुला इस किनारे से बीच की चट्टान पर उछला। फिर वहाँ से उछल कर दूसरे किनारे पर पहुँच गया। अब उसने बन्दर से कहा कि तुम भी ऐसे ही करो।
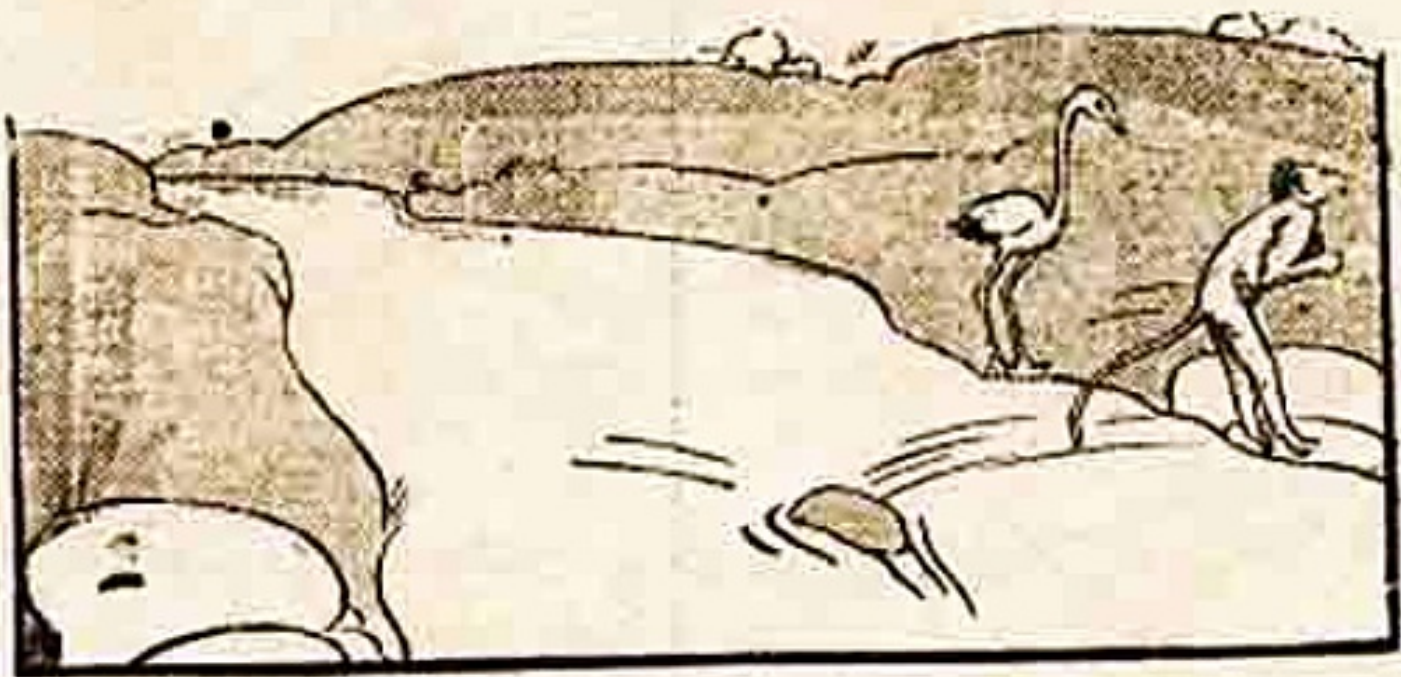
बन्दर भी उसी तरह पहले चट्टान पर उछला और फिर उस पार पहुँच गया।
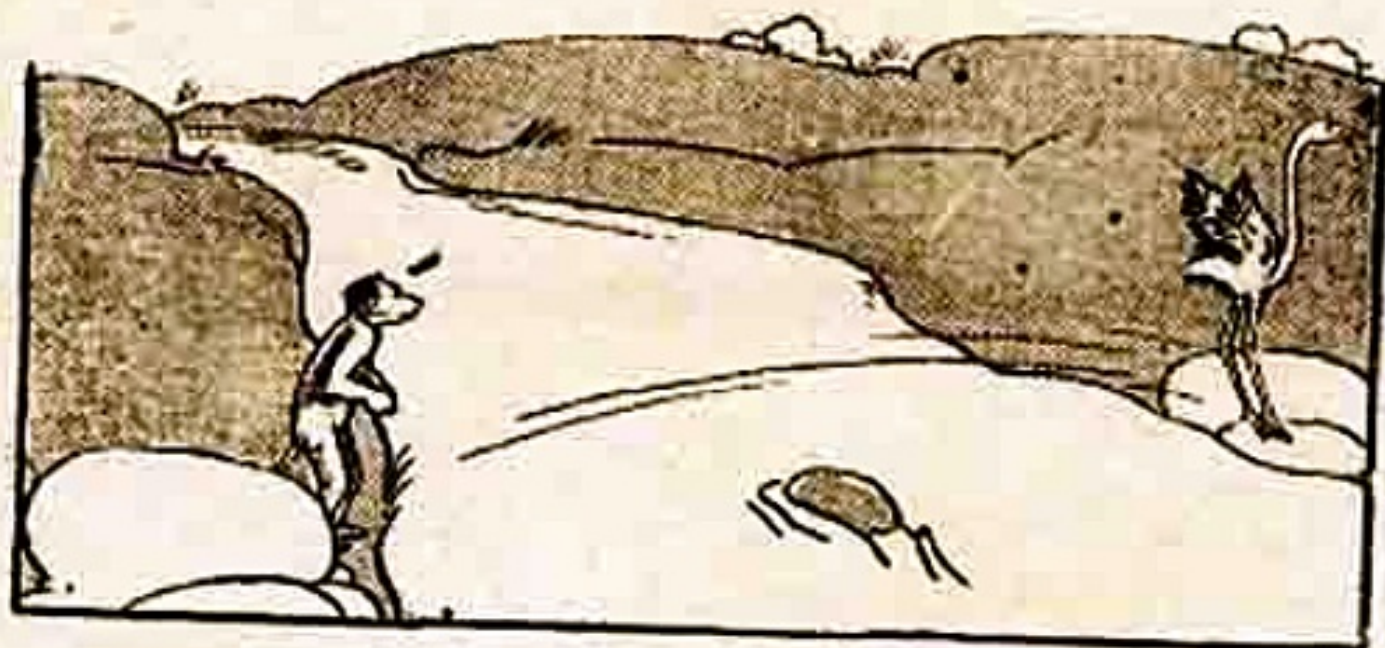
दूसरी बार बगुला एकदम इस किनारे से उछल कर उस किनारे पर पहुँच गया।
फिर उसने बन्दर को ललकारा कि तुम भी इसी तरह उछल जाओ तो देखें!
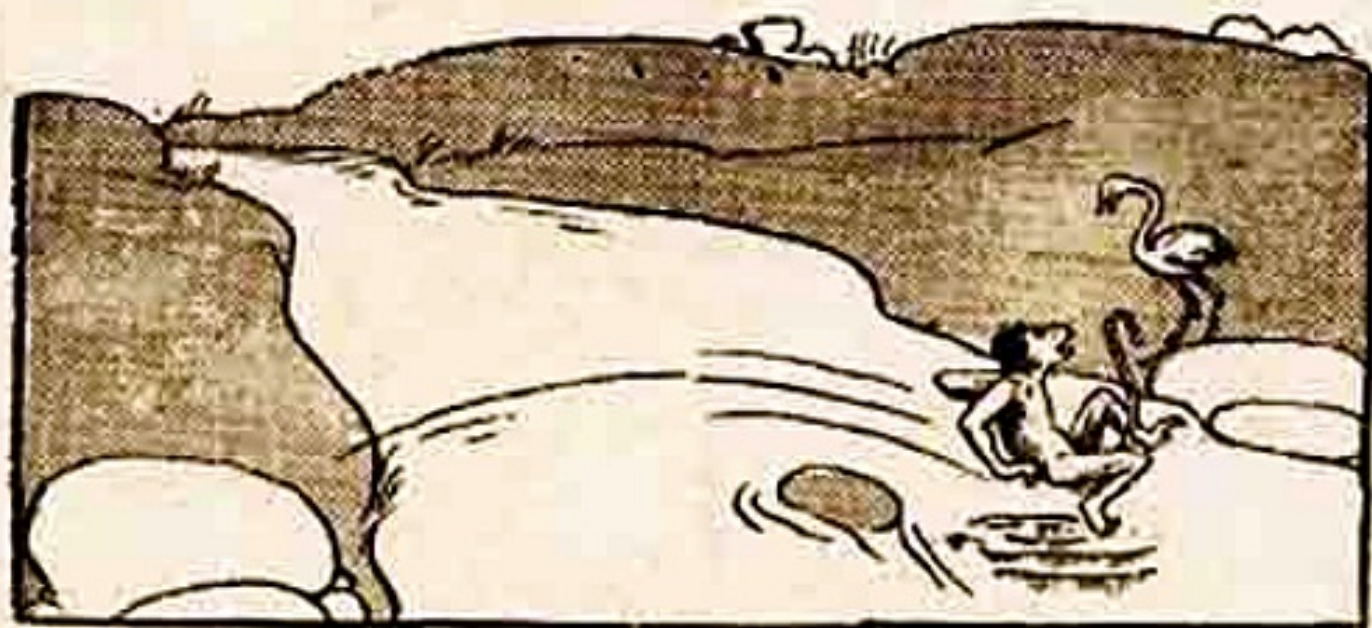
बन्दर ने भी उसी तरह उछलना चाहा। लेकिन
वह धड़ाम से बीच पानी में जा गिरा।

जीवन में साहस और स्वावलम्बन इनकी बड़ी ज़रूरत होती है। बच्चे स्वभाव से ही साहसी होते हैं। लेकिन हम अपनी सुविधा के लिए उनके साहस को दबा देते हैं और उन्हें डरपोक बना देते हैं। यह बड़ा अन्याय है। बच्चों के स्वाभाविक साहस का कभी भी नाश नहीं करना चाहिए। जब उन्हें कोई काम करना पड़े तो हमें उनकी मदद करनी चाहिए। उन्हें खूब प्रोत्साहन देना चाहिए। उनसे कहना चाहिए कि "बच्चो! डरने की कोई बात नहीं है। तुम यह काम करो तो सही!" अगर वे एक बार असफल हो जाएँ तो हमें उनसे कहना चाहिए कि "निराश न हो! फिर से कोशिश करो! इस बार तुम ज़रूर जीत जाओगे!" हमें कभी उनके काम में अड़ंगे नहीं डालने चाहिए। साधारणतः बड़े लोग बच्चों को काबू में रखने के लिए उन्हें हौआ या भूत-प्रेत का डर दिखाते हैं। अंत में बच्चों के मन में भय का भूत इस तरह लग जाता है कि वे अँधेरे में अकेले बाहर निकलने से भी डरने लगते हैं। वे दब्बू बन जाते हैं। इसलिए बड़ों को ऐसा कभी नहीं करना चाहिए।

जब बच्चा कोई ऐसा काम करने लगे जिसमें ख़तरा हो तब उसे ज़रूर रोकना चाहिए। लेकिन भूत-प्रेत और हौआ का डर दिखा कर नहीं। उन्हें समझाना चाहिए कि इस काम में यह ख़तरा है।

आवश्यकता से अधिक लाड़-प्यार करने से बच्चे परावलम्बी बन जाते हैं। बच्चों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे वे अपना सारा काम आप ही कर लें। तभी वे स्वावलम्बी बन सकते हैं।

तुम्हारी दीदी

ऊपर देखो! उस कमरे में दस कुत्ते हैं और एक हड्डी का टुकड़ा है। हरेक कुत्ता चाहता है कि वह बाकी सबको चकमा देकर हड्डी का टुकड़ा खुद छीन ले। अब तुम्हें सिर्फ़ चार लकीरें खींच कर दसों कुत्तों को दस हिस्सों में बन्द कर देना है। तब हड्डी का टुकड़ा भी सबसे अलग हो जाएगा और कुत्तों को झगड़ने का मौका न मिलेगा। क्या तुम उनको अलग कर सकते हो! अगर तुम से यह काम न हो सके तो ५६-वाँ पृष्ठ देखो।

बोतल में अण्डा!

यह सबसे आसान तमाशा है। लेकिन देखने वालों को यह सबसे मुश्किल मालूम होता है। वे यह तमाशा देख कर बहुत अचरज करने लगते हैं। क्योंकि वे देखते हैं कि बाजीगर एक मामूली अण्डा लेकर उसे एक बहुत ही तङ्ग मुँह वाली बोतल में घुसा देता है। वे सोचने लगते हैं कि अण्डा उस तङ्ग मुँह में समाया कैसे?

जैसा कि मैंने पहले ही कहा था यह तमाशा करना बड़ा आसान है। एक मामूली अण्डा ले लो। उसे तीस या चालीस घण्टे तक तीव्र एसेटिक एसिड (Acetic Acid) या सिरके (Vinegar) में डुबो कर रख दो। हाँ, एक बात जरूर याद रखो। एसिड को हाथ से छूना नहीं चाहिए और अगर छू भी जाय तो फिर हाथ अच्छी तरह धो लेना चाहिए। क्योंकि यह जहर है। जिस चीज में एसिड हो उसके ऊपर कोई ढकना रख देना चाहिए जिससे उसे हवा न लगे। यह बहुत जरूरी है। चालीस घण्टे बाद अण्डे को एसिड से निकाल लेना चाहिए। इस तरह तैयार किए हुए अण्डे को बाजीगर अपने कोट की जेब में या और कहीं छिपा ले जिससे देखने वाले न जान सकें।

फिर उसे एक दूसरा अण्डा लेकर लोगों को दिखाना चाहिए। वह उसे तमाश-बीनों के हाथ में भी दे सकता है जिससे उन्हें पूरा विश्वास हो जाय।

"देख लिया न आपने! अब मैं यही अण्डा इस तंग मुँह वाली बोतल में घुसा दूँगा।" बाजीगर उनसे कहेगा।

अगर एसिड में भिगोए हुए अण्डे पर किसी तरह के धब्बे हों तो बाजीगर को चाहिए कि वह दूसरे अण्डे पर भी ठीक उसी तरह के धब्बे बना ले। नहीं तो लोग पीछे अण्डा पहचान लेंगे और तुरन्त बाजीगर की कलई खुल जाएगी।

अब बाजीगर को बड़ी सफ़ाई के साथ एसिड में भिगोया हुआ अण्डा निकाल कर दूसरा अण्डा छुपा लेना चाहिए।

एसिड वाला अण्डा रबर की तरह मुलायम और लचीला होगा। लेकिन बाजीगर अगर होशियारी से काम लेगा तो तमाशा देखने वाले यह रहस्य न समझ पाएँगे। लचीला होने की वजह से अण्डा बड़ी आसानी से बोतल में चला जाएगा। फिर उस बोतल में थोड़ा ठण्डा या बरफ़ मिला हुआ पानी डाल दिया जाय तो अण्डा फिर पहले की तरह कड़ा बन जाएगा।

यह तमाशा करने में बाजीगर को किसी तरह की कठिनाई न होगी। जब मैं स्कूल में पढ़ा करता था तो मुझे यह तमाशा करते देख कर सारे

अध्यापक और छात्रगण ताज्जुब करते थे। बेचारे बहुत सिर खपाते थे। लेकिन इसका रहस्य उनकी समझ में न आता था। मैंने 'आल इंडिया रेडियो' कलकत्ते से एक बार इसका रहस्य खोल दिया था। क्यों, यह अच्छा तमाशा है न!

* * *

[अगर कोई इस सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार करना चाहें तो सीधे प्रोफेसर साहब को लिखें। प्रोफेसर साहब खुद उनके सारे सन्देह दूर करेंगे। हाँ, प्रोफेसर साहब को पत्र अंग्रेजी में ही लिखा जाए। यह ध्यान में रहे। प्रोफेसर साहब का पता:—

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मेजीशियन
पो. बा. ७८७८ कलकत्ता १२]

ऊपर चित्र के बीचों-बीच एक बतख है जिसके दो जुड़वाँ बच्चे अन्य बतख के बच्चों में मिल गए हैं। अब उन दोनों बच्चों को पहचानना है। वे दोनों जुड़वाँ हैं। इसलिए दोनों में बिल्कुल फ़रक नहीं है। क्या तुम उन दोनों को माँ से मिला सकते हो? अगर तुम से यह न हो सके तो नीचे उलट कर देखो।

३-९ संख्या वाले बतख के बच्चे जुड़वाँ भाई हैं।

संकेत

बाएँ से दाएँ

१. ज्यादातर

६. अभागा

८. झुका हुआ

१०. चिड़ियाँ

११. दया

१२. चञ्चल

१३. दाना

१५. ध्यान

१६. तन जाना

१८. स्वर्ग

ऊपर से नीचे

२. धिकार

३. ऊन की ओढ़नी

४. सिंहासन

५. सोने का हाथ

७. बावलापन
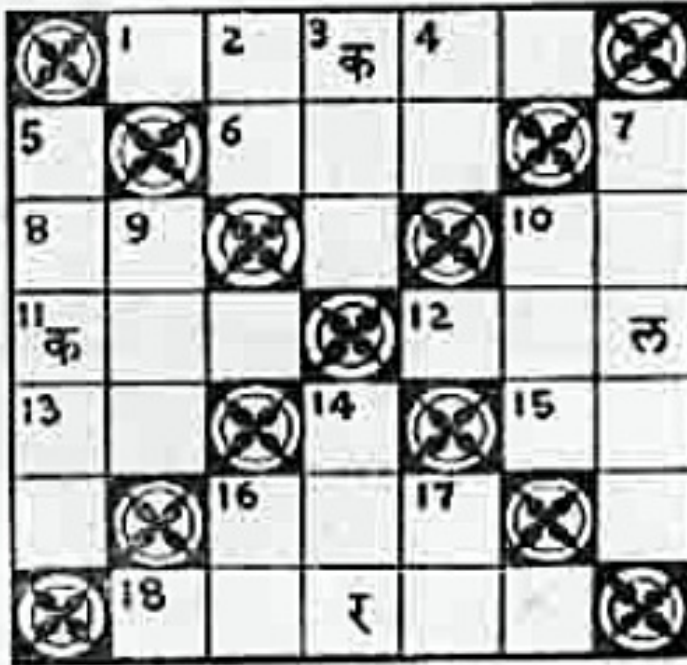
९. युवक

१०. बिक्री

१४. स्तम्भ

१६. अन्धेरा

१७. शरीर

	1	2	3 क	4		
5		6				7
8	9				10	
11 क				12		ल
13			14		15	
		16		17		
	18		र			
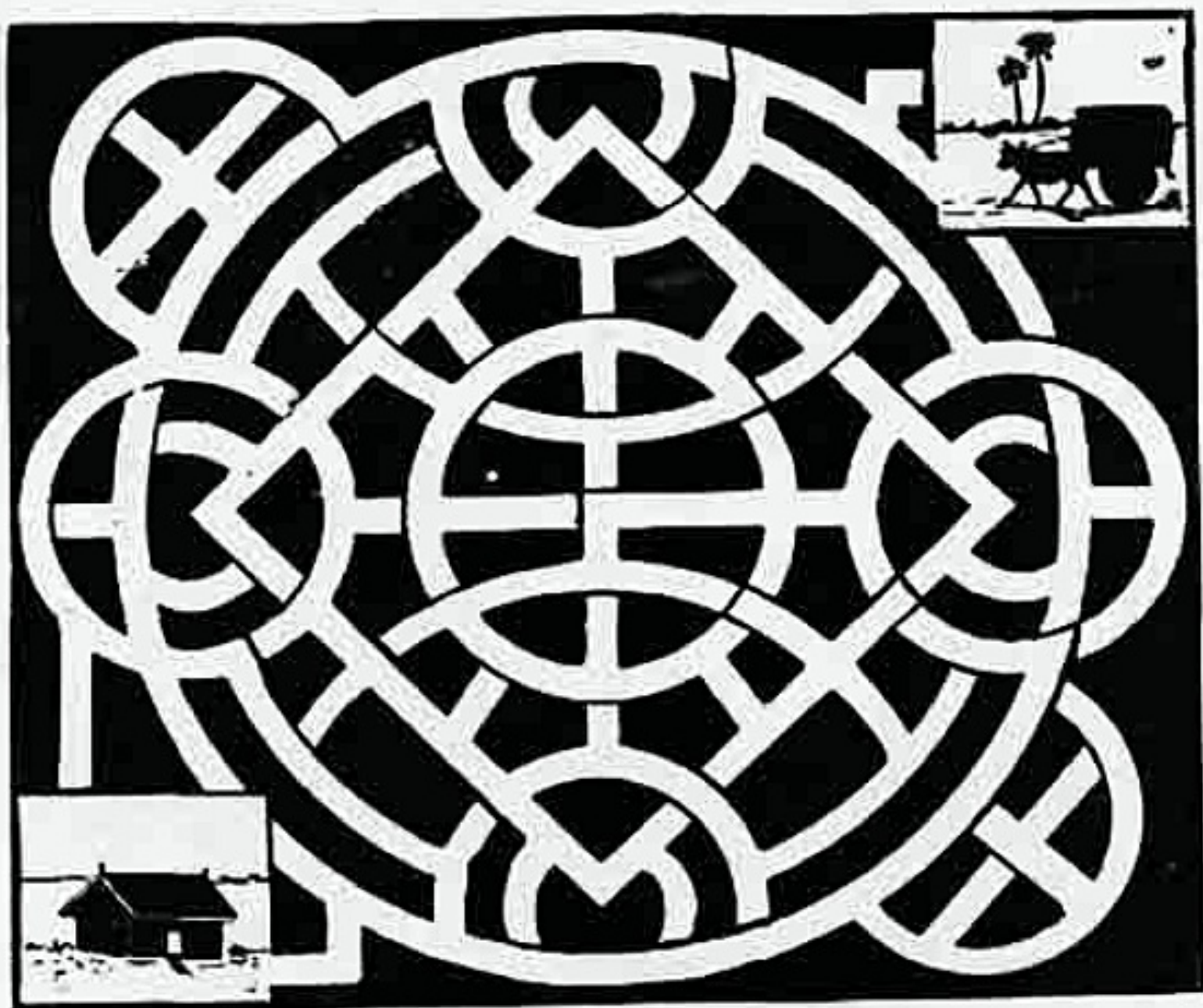
ऊपर चित्र के निचले बाएँ कोने में एक घर है। चित्र के ऊपरी दाएँ कोने में एक गाड़ी में कुछ मेहमान हैं। वे इस घर को जाना चाहते हैं। लेकिन उन्हें राह नहीं मालूम। क्य तुम उन्हें राह दिखा सकते हो!

५६-वें पृष्ठ के सूरज वाले चित्र का जवाब:

सूरज और उसके रथ के पहिए दोनों की गोलाई बराबर है।
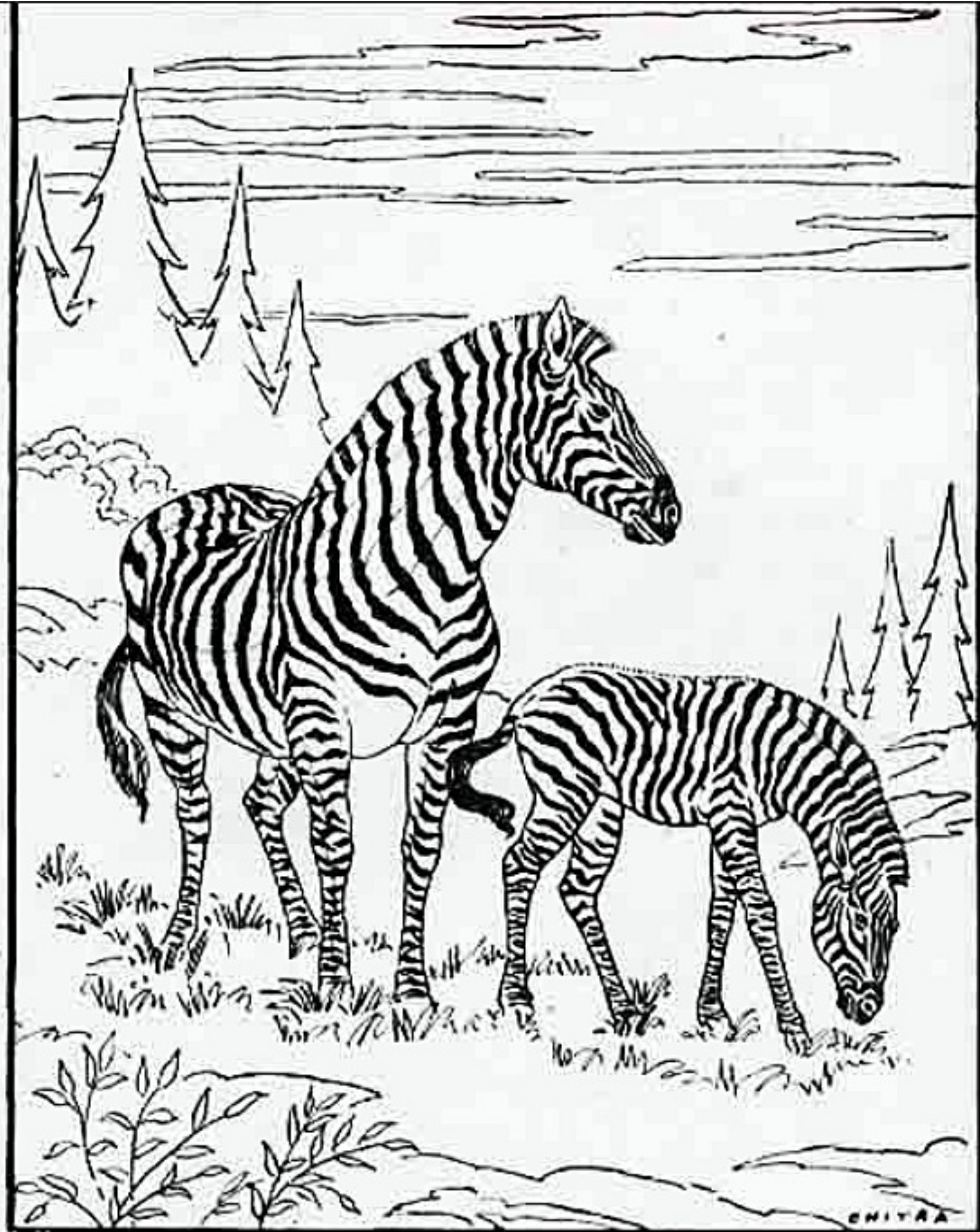
पिछली बार तुम ने जिराफ़ को रंग लिया होगा। इस बार सोचो कि ज़ेब्रा को किन रंगों से रंगना चाहिए। इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले महीने के चन्दामामा के पिछले कवर पर के चित्र से उसका मिलान करके देख लेना।

सूरज का रथ !
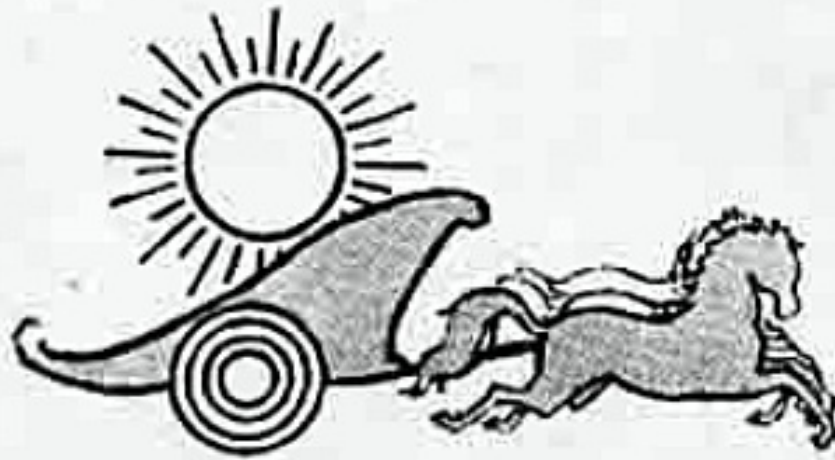
बच्चो ! क्या तुम बता सकते हो कि इस चित्र में सूरज बड़ा है या उसके रथ का पहिया ? अगर तुम न बता सको तो ५४-वाँ पृष्ठ देखो ।

चन्दामामा पहेली का जवाब :

	1 अ	2 धि	3 क	4 त	र	
5 क		6 क	म्ब	ख्त		7 पा
8 न	9 त		ल		10 ख	ग
11 क	रु	णा		12 च	प	ल
13 क	ण		14 मी		15 त	प
र		16 त	ना	17 व		न
	18 अ	म	र	पु	री	

पिछले महीने के छः चित्रों का जवाब जो भूल से छूट गया था :

दूसरे और छठे चित्र एक से हैं ।

★

दस कुत्तों वाली पहेली का जवाब :

निम्नलिखित प्रकार से लकीर खींच कर कुत्तों को अलग कर सकते हो । ३ से २२ तक, ९ से १८ तक १२ से ३५ तक, २० से ३८ तक

Controlling Editor : SRI CHAKKAPANI
Printed and Published by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press, Madras - 1

धीरों की गेंद

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 1950 Regd. No. M. 5452